विवाह रिपोर्ट — समय, जीवनसाथी और वैवाहिक जीवन

नमूना व्यक्ति

18/06/1995 07:45 Pune, Maharashtra, India

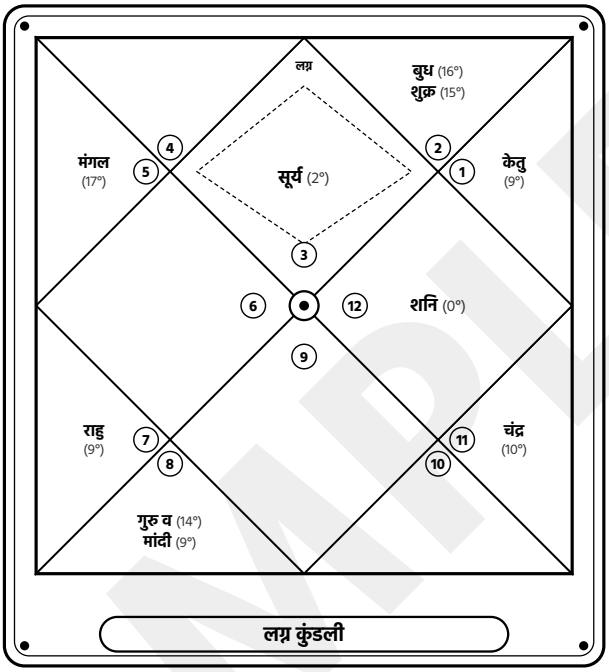

यह रिपोर्ट विवाह के लिए आपकी अपनी कुंडली पढ़ती है: सप्तम भाव और उसका स्वामी, शुक्र और गुरु, नवांश (D9) कुंडली, मांगलिक दोष, और विवाह दिलाने वाली दशाएँ — पक्ष और विपक्ष के कारण, जीवनसाथी और वैवाहिक जीवन से क्या अपेक्षा करें, समय की अवधियाँ और उपाय।

इस रिपोर्ट में: आपकी जन्म कुंडली और ग्रह · नवांश (D9) — विवाह की कुंडली · विवाह: निर्णय, कारण, जीवनसाथी और समय · आपकी दशाएँ · उपाय

कृपया ध्यान से पढ़ें। ज्योतिष प्रवृत्तियाँ और अनुकूल समय दिखाता है, निश्चितताएँ नहीं — विवाह आपके अपने निर्णयों, परिवार और परिस्थितियों पर निर्भर है। केवल इस रिपोर्ट के आधार पर किसी व्यक्ति के बारे में राय न बनाएँ, कोई रिश्ता न ठुकराएँ और विवाह में देर न करें, और इसका उपयोग कभी किसी पर दबाव डालने के लिए न करें। गणना पूरी सावधानी से की गई है, फिर भी यह रिपोर्ट किसी भी प्रकार की स्पष्ट या निहित गारंटी या वारंटी के बिना दी जाती है। किसी भी महत्वपूर्ण निर्णय से पहले अपने ज्योतिषी से सलाह अवश्य लें।

निर्मित: kyaboletaare.com

SAMPLE

जन्म विवरण

नाम	**नमूना व्यक्ति**	जन्म तिथि	**18/06/1995**
जन्म समय	**07:45:00**	स्थान	**Pune, Maharashtra, India**
अक्षांश / रेखांश	**18.5196 / 73.8554**	समय क्षेत्र	**UTC+05:30 IST**
जन्म का दिन	**रविवार**	सूर्योदय / सूर्यास्त	**06:00:17 / 19:12:48**
इष्टकाल (घटी)	**04:21:48**	अयनांश (लाहिड़ी)	**23:47:47**
लग्न	**मिथुन 25:50:01**	राशि (चंद्र राशि)	**कुंभ**
नक्षत्र	**शतभिषा (चरण 2)**	चंद्र राशि पाया	**रजत**
विंशोत्तरी शेष	**राहु 13 वर्ष 2 माह 10 दिन**		

जन्म के समय पंचांग

	जन्म के समय	आरंभ	समाप्ति
तिथि	**कृष्ण 6 (षष्ठी)**	17/06/1995 17:31	18/06/1995 16:05
नक्षत्र	**शतभिषा**	18/06/1995 01:31	19/06/1995 01:09
योग	**विष्कुंभ**	17/06/1995 10:57	18/06/1995 08:33
करण	**वणिज**	18/06/1995 04:42	18/06/1995 16:05
राशि	**कुंभ**	17/06/1995 14:00	19/06/1995 19:25

अवकहड़ा चक्र

वर्ण	वश्य	योनि	गण	नाड़ी	युंजा	तत्व
शूद्र	मानव	अश्व	राक्षस	आदि	अंत्य	वायु

SAMPLE

निरयन ग्रह स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र	चरण	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	उप स्वामी	भाव	अवस्था
लग्न	मिथुन	25:50:01	पुनर्वसु	2	बुध	गुरु	केतु	1	-
सूर्य	मिथुन	02:36:43	मृगशिरा	3	बुध	मंगल	केतु	1	बाल
चंद्र	कुंभ	10:13:35	शतभिषा	2	शनि	राहु	गुरु	9	कुमार
मंगल	सिंह	17:38:50	पूर्वा फाल्गुनी	2	सूर्य	शुक्र	मंगल	3	युवा
बुध	वृषभ	16:02:25	रोहिणी	2	शुक्र	चंद्र	शनि	12	युवा
गुरु (व)	वृश्चिक	14:40:06	अनुराधा	4	मंगल	शनि	राहु	6	युवा
शुक्र	वृषभ	15:13:44	रोहिणी	2	शुक्र	चंद्र	गुरु	12	युवा
शनि	मीन	00:40:37	पूर्वा भाद्रपद	4	गुरु	गुरु	मंगल	10	मृत
राहु (व)	तुला	09:04:01	स्वाति	1	शुक्र	राहु	गुरु	5	कुमार
केतु (व)	मेष	09:04:01	अश्विनी	3	मंगल	केतु	गुरु	11	कुमार
यूरेनस (व)	मकर	05:56:35	उत्तराषाढ़ा	3	शनि	सूर्य	बुध	8	मृत
नेप्च्यून (व)	मकर	01:06:49	उत्तराषाढ़ा	2	शनि	सूर्य	राहु	8	मृत
प्लूटो (व)	वृश्चिक	04:40:32	अनुराधा	1	मंगल	शनि	शनि	6	मृत
मांदी	वृश्चिक	09:57:47	अनुराधा	2	मंगल	शनि	शुक्र	6	-
भाग्यबिंदु	मीन	03:26:53	उत्तरा भाद्रपद	1	गुरु	शनि	शनि	10	-

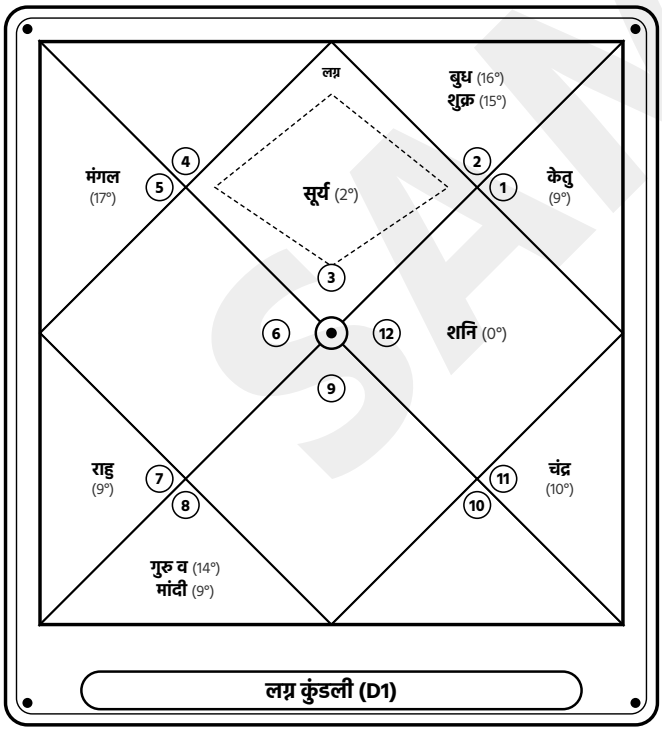

लग्न कुंडली (D1)

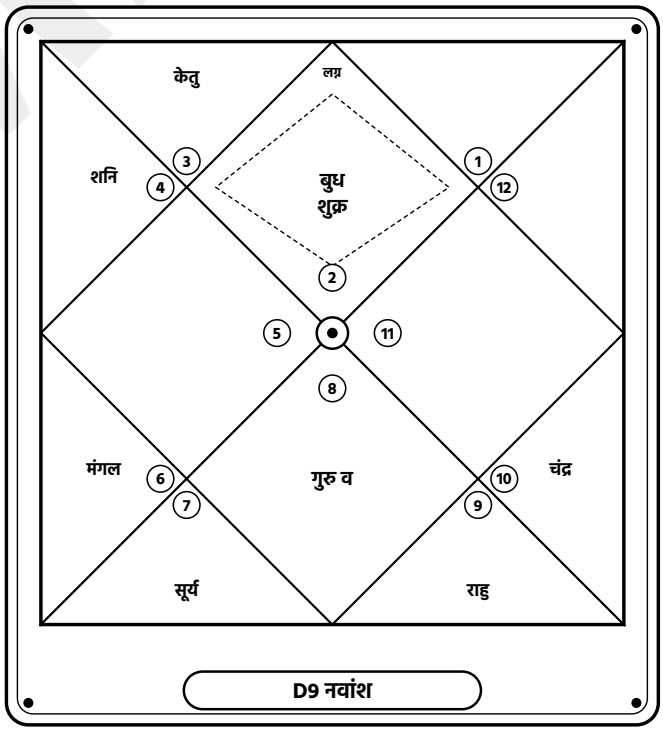

D9 नवांश

इस कुंडली में दोष:

चंद्र से मांगलिक दोष है (इसे सामान्यतः हल्का माना जाता है): मंगल आपके चंद्र से भाव 7 में है।

इनकी व्याख्या, उपायों सहित, आगे के पृष्ठों में दी गई है।

SAMPLE

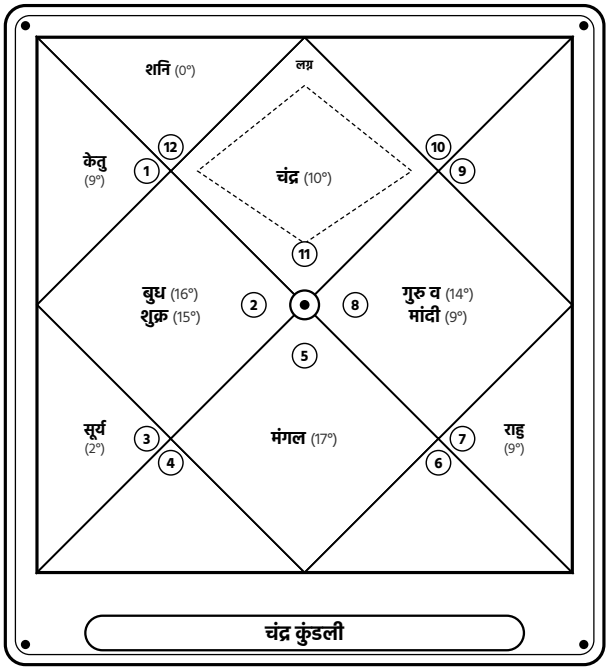

वर्गोत्तम ग्रह: बुध, गुरु, शुक्र

SAMPLE

वर्ग कुंडलियों से फल

D9 — नवांश (जीवनसाथी, धर्म)

नवांश सबसे महत्वपूर्ण वर्ग कुंडली है। यह विवाह और जीवनसाथी, भीतरी चरित्र, धर्म और प्रत्येक ग्रह की वास्तविक शक्ति दिखाता है। नवांश में बलवान ग्रह भरोसेमंद फल देता है, भले ही वह जन्म कुंडली में कमज़ोर दिखे।

इस कुंडली का लग्न: वृषभ

नवांश लग्न वृषभ: आप स्नेही, वफ़ादार और रक्षा करने वाले हैं। आपका सातवाँ भाव वृश्चिक है, जिसका स्वामी मंगल है, इसलिए साथी प्रायः तीव्र, भावुक और दृढ़ इच्छाशक्ति वाले होते हैं। किसी भी ओर से अधिकार-भाव को संभालना है; भरोसा और साझा दिनचर्या आपके वैवाहिक जीवन को सबसे अच्छा बनाते हैं।

ग्रह	राशि	भाव	बल	इस कुंडली में स्थिति
सूर्य	तुला	6	नीच	कमज़ोर
चंद्र	मकर	9	सम राशि	अच्छी स्थिति
मंगल	कन्या	5	शत्रु राशि	अच्छी स्थिति
बुध	वृषभ	1	मित्र राशि	अच्छी स्थिति
गुरु	वृश्चिक	7	मित्र राशि	अच्छी स्थिति
शुक्र	वृषभ	1	स्वराशि	मज़बूत
शनि	कर्क	3	शत्रु राशि	मध्यम
राहु	धनु	8	सम राशि	सावधानी चाहिए
केतु	मिथुन	2	सम राशि	मध्यम

इस कुंडली के लग्न का स्वामी शुक्र भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत) में है, जो इस कुंडली के विषयों को सहारा देता है।

आधार: बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — षोडश वर्ग और उनके उपयोग।

SAMPLE

जीवन के क्षेत्र

जीवन के हर क्षेत्र को उससे जुड़ी सब बातों को मिलाकर परखा जाता है: उसके भाव और उनके स्वामी, उनमें बैठे या उन्हें देखने वाले ग्रह, स्वाभाविक कारक, अष्टकवर्ग अंक और उसका अध्ययन करने वाला विभाजित चार्ट। हर क्षेत्र के लिए आपको स्पष्ट निष्कर्ष मिलता है, उसके पक्ष और विपक्ष के कारण, क्या अपेक्षा करें, और वे अवधियाँ जिनमें वह सबसे अधिक सक्रिय रहने की संभावना है।

विवाह और साझेदारी — मज़बूत (6.2/10)

विवाह का विचार सातवें भाव (जीवनसाथी और साझेदारी) से होता है, साथ में दूसरे (पारिवारिक जीवन) और बारहवें (निकटता और शय्या-सुख) से। शुक्र विवाह का कारक है (और स्त्री की कुंडली में गुरु पति का कारक)। यहाँ नवांश (D9) अत्यंत आवश्यक है।

निष्कर्ष: विवाह और साझेदारी अच्छी तरह समर्थित हैं: आपकी कुंडली स्थिर, स्नेहपूर्ण रिश्ते के पक्ष में है।

क्या सहारा देता है

- भाव 2 के स्वामी चंद्र भाव 9 (भाग्य, पिता) में हैं, जो सहायक भाव है; इससे ये विषय उस क्षेत्र से जुड़ते हैं।
- गुरु वर्गोत्तम हैं (D1 और D9 में एक ही राशि), जो स्थायी बल का संकेत है।
- गुरु इस भाव को देखते हैं, जो इसके विषयों के लिए शास्त्रीय आशीर्वाद है।
- भाव 12 के स्वामी शुक्र अपने ही घर में हैं, जिससे इस भाव की हर बात को बल मिलता है।
- शुक्र अपनी राशि में हैं, इसलिए वे मज़बूत फल दे सकते हैं।

क्या रोकता है

- भाव 7 के स्वामी गुरु कठिन भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में हैं, इसलिए इन विषयों में देरी, अधिक मेहनत या घुमावदार रास्ता मिलता है।
- सूर्य, पाप ग्रह, इस भाव को देखकर तनाव जोड़ते हैं।
- शनि, पाप ग्रह, इस भाव को देखकर तनाव जोड़ते हैं।
- केतु, पाप ग्रह, इस भाव को देखकर तनाव जोड़ते हैं।

क्या अपेक्षा करें

- सातवाँ भाव धनु राशि में पड़ता है और उसके स्वामी गुरु भाव 6 में हैं। जीवनसाथी समझदार, दयालु और सुशिक्षित, अच्छे संस्कारों वाला होने की संभावना है (गुरु द्वारा दर्शाया गया)।
- शुक्र भाव 12 में है और गुरु भाव 6 में; शुक्र, गुरु और सातवें भाव के स्वामी की दशाएँ विवाह और रिश्ते में महत्वपूर्ण बदलावों के सबसे संभावित समय हैं।
- शनि सातवें भाव को प्रभावित करते हैं: विवाह अक्सर कुछ देर से होता है, परिपक्व या गंभीर जीवनसाथी के साथ, और समय के साथ मज़बूत होता है।

विस्तार से: विवाह और साझेदारी

इस क्षेत्र का मुख्य भाव, भाव 7 है। यह धनु राशि में पड़ता है, और इसका स्वामी गुरु भाव 6 में बैठा है।

सातवें भाव में धनु राशि एक प्रसन्न, ईमानदार और स्वतंत्रता-प्रेमी साथी की ओर संकेत करती है, जो शायद अलग पृष्ठभूमि या स्थान से हो; साझा मूल्य और यात्रा बंधन में मदद करते हैं।

आपके सातवें भाव का स्वामी छठे भाव में बैठा है: साथी से काम या सेवा के माध्यम से भेंट हो सकती है, और रिश्ते को धैर्य चाहिए, क्योंकि रोज़ के कर्तव्यों और छोटी असहमतियों को सावधानी से सँभालना पड़ता है।

इस भाव में कोई ग्रह नहीं बैठा है, इसलिए इसके फल मुख्यतः इसके स्वामी और इसे देखने वाले ग्रहों के माध्यम से मिलते हैं।

अपनी राशि वृषभ में शुक्र आपको स्नेही, इंद्रिय-सुखप्रिय और वफ़ादार बनाता है; आप सुख-सुविधा, अच्छे भोजन और स्थायी

SAMPLE

प्रतिबद्धता को महत्व देते हैं।

आयु 21 के बाद पहली दृढ़ता से सहायक दशाएँ ये हैं: गुरु–शुक्र (09/07/2016 से 11/03/2019 तक, आयु 21–23); शनि–गुरु (14/02/2041 से 28/08/2043 तक, आयु 45–48); बुध–चंद्र (27/09/2050 से 27/02/2052 तक, आयु 55–56)।

ध्यान देने योग्य वर्ष — गुरु और शनि वे दो धीमे ग्रह हैं जो तय करते हैं कि जीवन की घटनाएँ वास्तव में कब होती हैं। जब दोनों एक साथ किसी क्षेत्र के भाव को प्रभावित करते हैं (इसे "दोहरा गोचर" कहते हैं), तब उस क्षेत्र के विषय सामने आने की प्रवृत्ति रखते हैं। अगले 25 वर्षों में आपके समय-खंड:

- 22/11/2026 से 31/01/2027 तक (आयु 31): गुरु सिंह में और शनि मीन में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, इसलिए ये विषय सामने आते हैं।
- 02/10/2030 से 19/02/2031 तक (आयु 35): गुरु वृश्चिक में और शनि वृषभ में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, इसलिए ये विषय सामने आते हैं।
- 19/06/2031 से 17/10/2031 तक (आयु 36): गुरु वृश्चिक में और शनि वृषभ में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, इसलिए ये विषय सामने आते हैं।
- 22/08/2032 से 31/10/2032 तक (आयु 37): गुरु धनु में और शनि मिथुन में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, इसलिए ये विषय सामने आते हैं।
- 06/02/2043 से 05/08/2043 तक (आयु 47–48): गुरु धनु में और शनि तुला में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – गुरु दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 14/09/2043 से 13/12/2043 तक (आयु 48): गुरु धनु में और शनि तुला में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, इसलिए ये विषय सामने आते हैं।

समय

- अभी चल रही: शनि – शनि (31/08/2027 तक) सीधे इस क्षेत्र को छूती है, और इसके लिए उसका स्वर शुभ है।
- आगे की सबसे अच्छी अवधियाँ: शनि–गुरु (14/02/2041 से 28/08/2043 तक, आयु 45–48); बुध–चंद्र (27/09/2050 से 27/02/2052 तक, आयु 55–56)।

सलाह

- विवाह का साथ है; रिश्ते को समय और ईमानदार संवाद दें।
- इस क्षेत्र की सबसे कमज़ोर कड़ी गुरु है। इसे मज़बूत करने के लिए: गुरुवार को शुभ कर्मों का नियमित दिन रखें, रंग पीला पहनें या अपनाएँ, और श्रद्धा से इसके मंत्र का जाप करें (ॐ गुरवे नमः)।

भाव	राशि	स्वामी (कहाँ बैठा)	भाव में ग्रह	सर्वाष्टक अंक
7	धनु	गुरु (भाव 6)	—	25
2	कर्क	चंद्र (भाव 9)	—	27
12	वृषभ	शुक्र (भाव 12)	बुध, शुक्र	22

आधार: बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — भावों और उनके कारकों का विचार; मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — भाव-अनुसार फल; वैद्यनाथ दीक्षित का जातक पारिजात (लगभग 15वीं शताब्दी) — भावों के फल।

SAMPLE

विवाह का समय — अवधि-दर-अवधि

नीचे अगले 15 वर्षों की हर अंतर्दशा जाँची गई है। **दशा संबंध** बताता है कि उस अवधि के ग्रह विवाह (सप्तम भाव और उसका स्वामी, शुक्र, गुरु, द्वितीय और एकादश भाव) से कितनी मज़बूती से जुड़े हैं। **दोहरा गोचर** उन महीनों को दर्शाता है जब गुरु और शनि दोनों एक साथ आपके सप्तम भाव या उसके स्वामी को प्रभावित करते हैं — यह शास्त्रीय संकेत है कि दशा द्वारा वादा की गई घटना घट सकती है। जिन अवधियों में दोनों हों, वे सबसे अधिक संभावित हैं; इनके बिना भी प्रयास और पारिवारिक परिस्थितियों से विवाह हो सकता है। यदि आप विवाहित हैं, तो यही अवधियाँ बताती हैं कि वैवाहिक जीवन कब ध्यान माँगता है या उन्नति लाता है।

सबसे संभावित अवधियाँ: शनि – शुक्र (19/06/2031 – 19/08/2034); शनि – गुरु (14/02/2041 – 28/08/2043)।

अवधि	से – तक	आयु	दशा संबंध	दोहरा गोचर	संभावना
शनि – शनि	22/11/2026 – 31/08/2027	31–32	मध्यम	हाँ, 3 महीने	**मध्यम**
शनि – बुध	31/08/2027 – 10/05/2030	32–34	मध्यम	हाँ, 1 महीने	**मध्यम**
शनि – केतु	10/05/2030 – 19/06/2031	34–36	कम	हाँ, 5 महीने	**कम**
शनि – शुक्र	19/06/2031 – 19/08/2034	36–39	मध्यम	हाँ, 7 महीने	**अधिक**
शनि – सूर्य	19/08/2034 – 01/08/2035	39–40	कम	नहीं	**कम**
शनि – चंद्र	01/08/2035 – 01/03/2037	40–41	मध्यम	नहीं	**मध्यम**
शनि – मंगल	01/03/2037 – 10/04/2038	41–42	कम	नहीं	**कम**
शनि – राहु	10/04/2038 – 14/02/2041	42–45	कम	हाँ, 1 महीने	**कम**
शनि – गुरु	14/02/2041 – 28/08/2043	45–48	मध्यम	हाँ, 6 महीने	**अधिक**

SAMPLE

आपकी दशाएँ

विंशोत्तरी पद्धति में जीवन को नौ ग्रहों द्वारा एक तय क्रम में चलाई जाने वाली अवधियों (महादशाओं) में बाँटा गया है। हर अवधि उप-अवधियों (अंतर्दशाओं) में बँटी है। किसी अवधि के फल इस पर निर्भर करते हैं कि आपकी अपनी कुंडली में उसका स्वामी ग्रह किसका प्रतिनिधि है: किन भावों का स्वामी है, किस भाव में बैठा है और कितना बलवान है।

राहु महादशा: 18/06/1995 से 27/08/2008 तक

राहु की दशा महत्वाकांक्षा, अचानक परिवर्तन, विदेशी संबंध और लीक से हटकर अवसर लाती है। यह आपको तेज़ी से ऊपर उठा सकती है। यह नैतिक और स्पष्ट सोच वाले बने रहने का समय है; भ्रम, धोखे और जोखिम भरे शॉर्टकट से बचें।

राहु छाया ग्रह है, जो अपनी राशि और उसके स्वामी शुक्र के अनुसार फल देता है, और यह आपकी कुंडली में सहायक भाव (केंद्र या त्रिकोण) में है, जो सामान्यतः अच्छे फल देता है — भाव 5, जो संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता का भाव है। यह मित्र राशि में है, जो इसके फलों को सहारा देती है।

कुल स्वर: शुभ। यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: संतान (शुभ), यात्रा और विदेश से संबंध (शुभ)।

सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: शनि (03/10/1995), बुध (09/08/1998)। जिन अंतर्दशाओं में अधिक सावधानी चाहिए: सूर्य (16/03/2005), मंगल (10/08/2007)।

राहु – गुरु: 18/06/1995 से 03/10/1995 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। गुरु आपके भाव 7 और 10 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार; करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) का स्वामी है, और यह कठिन भाव (6, 8 या 12) में है, इसलिए इसके विषयों में सावधानी और धैर्य चाहिए — भाव 6, जो प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग, सेवा और शत्रु का भाव है। यह मित्र राशि में है, जो इसके फलों को सहारा देती है। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: संतान (अधिकतर अनुकूल)।

राहु – शनि: 03/10/1995 से 09/08/1998 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। शनि आपके भाव 8 और 9 (अचानक परिवर्तन, शोध, विरासत और आयु; भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ) का स्वामी है, और यह आपकी कुंडली में सहायक भाव (केंद्र या त्रिकोण) में है, जो सामान्यतः अच्छे फल देता है — भाव 10, जो करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार का भाव है। यह सम राशि में है। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: संतान (शुभ), आध्यात्मिक जीवन (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी 6/8 संबंध में हैं, इसलिए महादशा और अंतर्दशा के विषय एक-दूसरे के विपरीत खिंच सकते हैं।

राहु – बुध: 09/08/1998 से 26/02/2001 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। बुध आपके भाव 1 और 4 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत; घर, माता, संपत्ति, वाहन और मन की शांति) का स्वामी है, और यह कठिन भाव (6, 8 या 12) में है, इसलिए इसके विषयों में सावधानी और धैर्य चाहिए — भाव 12, जो खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद का भाव है। यह मित्र राशि में है, जो इसके फलों को सहारा देती है। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: शिक्षा और विद्या (शुभ), यात्रा और विदेश से संबंध (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी 6/8 संबंध में हैं, इसलिए महादशा और अंतर्दशा के विषय एक-दूसरे के विपरीत खिंच सकते हैं।

राहु – केतु: 26/02/2001 से 16/03/2002 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। केतु छाया ग्रह है, जो अपनी राशि और उसके स्वामी मंगल के अनुसार फल देता है, और यह उपचय भाव (3, 6, 10 या 11) में है, जिसके फल समय के साथ प्रयास से बढ़ते हैं — भाव 11, जो आय, लाभ, मित्र और इच्छापूर्ति का भाव है। यह मित्र राशि में है, जो इसके फलों को सहारा देती है। स्वर: अधिकतर अनुकूल। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

SAMPLE

राहु – शुक्र: 16/03/2002 से 16/03/2005 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। शुक्र आपके भाव 5 और 12 (संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता; खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद) का स्वामी है, और यह कठिन भाव (6, 8 या 12) में है, इसलिए इसके विषयों में सावधानी और धैर्य चाहिए — भाव 12, जो खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद का भाव है। यह अपनी राशि में है, जिससे इसे आत्मविश्वास और स्थिरता मिलती है। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: संतान (शुभ), यात्रा और विदेश से संबंध (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी 6/8 संबंध में हैं, इसलिए महादशा और अंतर्दशा के विषय एक-दूसरे के विपरीत खिंच सकते हैं।

राहु – सूर्य: 16/03/2005 से 08/02/2006 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। सूर्य आपके भाव 3 (साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद) का स्वामी है, और यह आपकी कुंडली में सहायक भाव (केंद्र या त्रिकोण) में है, जो सामान्यतः अच्छे फल देता है — भाव 1, जो स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत का भाव है। यह सम राशि में है। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: यात्रा और विदेश से संबंध (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

राहु – चंद्र: 08/02/2006 से 10/08/2007 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। चंद्र आपके भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) का स्वामी है, और यह आपकी कुंडली में सहायक भाव (केंद्र या त्रिकोण) में है, जो सामान्यतः अच्छे फल देता है — भाव 9, जो भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ का भाव है। यह सम राशि में है। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: संतान (अधिकतर अनुकूल), आध्यात्मिक जीवन (अधिकतर अनुकूल)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

राहु – मंगल: 10/08/2007 से 27/08/2008 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। मंगल आपके भाव 6 और 11 (प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग, सेवा और शत्रु; आय, लाभ, मित्र और इच्छापूर्ति) का स्वामी है, और यह उपचय भाव (3, 6, 10 या 11) में है, जिसके फल समय के साथ प्रयास से बढ़ते हैं — भाव 3, जो साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद का भाव है। यह मित्र राशि में है, जो इसके फलों को सहारा देती है। स्वर: मिश्रित। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

गुरु महादशा: 27/08/2008 से 27/08/2024 तक

गुरु की दशा परंपरा से वृद्धि, ज्ञान, संतान, गुरुजनों तथा धार्मिक या परोपकारी कार्यों का समय मानी जाती है। सीखने और विस्तार के अवसर मिलते हैं। यह ईमानदारी और उदारता से काम करने का समय है; अति-आत्मविश्वास से बचें।

गुरु आपके भाव 7 और 10 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार; करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) का स्वामी है, और यह कठिन भाव (6, 8 या 12) में है, इसलिए इसके विषयों में सावधानी और धैर्य चाहिए — भाव 6, जो प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग, सेवा और शत्रु का भाव है। यह मित्र राशि में है, जो इसके फलों को सहारा देती है।

कुल स्वर: मिश्रित। यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (मिश्रित), विवाह और साझेदारी (मिश्रित), धन और आर्थिक स्थिति (मिश्रित)।

सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: शनि (15/10/2010), बुध (28/04/2013)। जिन अंतर्दशाओं में अधिक सावधानी चाहिए: सूर्य (11/03/2019), मंगल (28/04/2021)।

गुरु – गुरु: 27/08/2008 से 15/10/2010 तक

महादशा स्वामी की अपनी ही यह अंतर्दशा उसके फलों को और गहरा करती है। गुरु फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 7 और

SAMPLE

10 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 6 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (मिश्रित), विवाह और साझेदारी (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

गुरु – शनि: 15/10/2010 से 28/04/2013 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। शनि फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 8 और 9 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 10 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (शुभ), आध्यात्मिक जीवन (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

गुरु – बुध: 28/04/2013 से 04/08/2015 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। बुध फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 1 और 4 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 12 में बैठे हैं। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (अधिकतर अनुकूल), विवाह और साझेदारी (अधिकतर अनुकूल)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

गुरु – केतु: 04/08/2015 से 09/07/2016 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। केतु फिर अपनी राशि और राशि स्वामी के फल देते हैं, और आपकी कुंडली के भाव 11 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (मिश्रित), विवाह और साझेदारी (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी 6/8 संबंध में हैं, इसलिए महादशा और अंतर्दशा के विषय एक-दूसरे के विपरीत खिंच सकते हैं।

गुरु – शुक्र: 09/07/2016 से 11/03/2019 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। शुक्र फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 5 और 12 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 12 में बैठे हैं। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: विवाह और साझेदारी (अधिकतर अनुकूल), संतान (अधिकतर अनुकूल)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

गुरु – सूर्य: 11/03/2019 से 28/12/2019 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। सूर्य फिर अपने भाव के विषय लाते हैं: ये भाव 3 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 1 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (मिश्रित), विवाह और साझेदारी (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी 6/8 संबंध में हैं, इसलिए महादशा और अंतर्दशा के विषय एक-दूसरे के विपरीत खिंच सकते हैं।

गुरु – चंद्र: 28/12/2019 से 28/04/2021 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। चंद्र फिर अपने भाव के विषय लाते हैं: ये भाव 2 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 9 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: विवाह और साझेदारी (मिश्रित), करियर और व्यवसाय (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

गुरु – मंगल: 28/04/2021 से 04/04/2022 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। मंगल फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 6 और 11 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 3 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (मिश्रित), धन और आर्थिक स्थिति (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

गुरु – राहु: 04/04/2022 से 27/08/2024 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। राहु

SAMPLE

छाया ग्रह है, जो अपनी राशि और उसके स्वामी शुक्र के अनुसार फल देता है, और यह आपकी कुंडली में सहायक भाव (केंद्र या त्रिकोण) में है, जो सामान्यतः अच्छे फल देता है — भाव 5, जो संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता का भाव है। यह मित्र राशि में है, जो इसके फलों को सहारा देती है। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: संतान (अधिकतर अनुकूल), करियर और व्यवसाय (अधिकतर अनुकूल)।

शनि महादशा: 27/08/2024 से 28/08/2043 तक (अभी चल रही है)

शनि की दशा धैर्य, कड़ी मेहनत और ज़िम्मेदारी माँगती है। परिणाम धीरे आते हैं पर टिकाऊ होते हैं। यह अनुशासन बनाने, दूसरों की सेवा करने, जोड़ों का ध्यान रखने और शॉर्टकट से बचने का समय है।

शनि आपके भाव 8 और 9 (अचानक परिवर्तन, शोध, विरासत और आयु; भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ) का स्वामी है, और यह आपकी कुंडली में सहायक भाव (केंद्र या त्रिकोण) में है, जो सामान्यतः अच्छे फल देता है — भाव 10, जो करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार का भाव है। यह सम राशि में है।

कुल स्वर: शुभ। यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ), करियर और व्यवसाय (शुभ), संतान (शुभ)।

सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: शनि (27/08/2024), शुक्र (19/06/2031)। जिन अंतर्दशाओं में अधिक सावधानी चाहिए: सूर्य (19/08/2034), मंगल (01/03/2037)।

दसवें भाव में शनि कड़ी मेहनत और ज़िम्मेदारी पर बना प्रभावशाली करियर दे सकता है। उन्नति धीमी हो सकती है, पर पक्की होती है। सरकार, प्रशासन, इंजीनियरिंग, खनन, निर्माण और प्रबंधन आपके अनुकूल हैं। शास्त्र यहाँ शनि को बलवान मानते हैं। ईमानदारी आवश्यक है, क्योंकि शनि ईमानदार काम का फल देता है और शॉर्टकट का दंड।

दसवें भाव में आठवें भाव का स्वामी करियर में बदलाव ला सकता है। शोध, बीमा, खनन या जाँच-पड़ताल आपके अनुकूल हैं।

दसवें भाव में नौवें भाव का स्वामी मज़बूत राजयोग बनाता है (नौवें और दसवें भाव के स्वामी)। यह पद-प्रतिष्ठा, सफलता और सम्मान देता है।

भाव 10 के विषय:

- **व्यापार और पेशा** — क्या हो सकता है: व्यापार का विस्तार और बाज़ार में बेहतर नाम। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: खर्च पर नियंत्रण रखें, हिसाब साफ़ रखें और विस्तार से पहले विशेषज्ञ की सलाह लें।
- **अधिकारी और अधिकारधारी लोग** — क्या हो सकता है: अधिकारियों और अधिकारधारी लोगों का सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: स्पष्ट संवाद करें, समय पर काम पूरा करें और सार्वजनिक बहस से बचें।
- **प्रतिष्ठा और सार्वजनिक छवि** — क्या हो सकता है: प्रतिष्ठा और सम्मान में वृद्धि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: आचरण निर्दोष रखें और ऑनलाइन कुछ भी डालने से पहले दो बार सोचें।

भाव 8 के विषय:

- **विरासत और साझा धन** — क्या हो सकता है: विरासत, बीमा या ससुराल पक्ष से लाभ। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: वसीयत और कागज़ात स्पष्ट रखें और किसी भी समझौते से पहले क़ानूनी सलाह लें।
- **शोध और गूढ़ विषय** — क्या हो सकता है: गहरा शोध, अंतर्दृष्टि और गूढ़ विषयों के अध्ययन में सफलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: नियमित दिनचर्या रखें और अति या जोखिम भरी साधनाओं से बचें।
- **स्वास्थ्य और सुरक्षा** — क्या हो सकता है: बीमारी के दौर के बाद स्वास्थ्य-लाभ। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: नियमित जाँच कराएँ, जोखिम भरी गतिविधियों से बचें और सावधानी से वाहन चलाएँ व यात्रा करें। डॉक्टर को जल्दी दिखाएँ।

भाव 9 के विषय:

- **दान और पुण्य कर्म** — क्या हो सकता है: सार्थक दान का अवसर जो आशीर्वाद दिलाए। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: चुपचाप सच्चे कार्यों के लिए दें और कभी अपनी सामर्थ्य से अधिक न दें।
- **भाग्य और सौभाग्य** — क्या हो सकता है: भाग्य साथ देता है और प्रयासों का फल मिलता है। इसे ऐसा ही बनाए रखने के

SAMPLE

लिए: लगातार काम करते रहें, केवल भाग्य पर निर्भर न रहें और कृतज्ञता के साथ दान करें।
- **पिता** — क्या हो सकता है: पिता या पिता समान व्यक्तियों से अच्छी खबर, सहयोग या आशीर्वाद। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: उनसे अक्सर बात करें, पुरानी बहसों से बचें और उनकी नियमित स्वास्थ्य जाँच न छूटे यह देखें।

शनि – शनि: 27/08/2024 से 31/08/2027 तक

महादशा स्वामी की अपनी ही यह अंतर्दशा उसके फलों को और गहरा करती है। शनि फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 8 और 9 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 10 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ), करियर और व्यवसाय (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

दसवें भाव में शनि कड़ी मेहनत और ज़िम्मेदारी पर बना प्रभावशाली करियर दे सकता है। उन्नति धीमी हो सकती है, पर पक्की होती है। सरकार, प्रशासन, इंजीनियरिंग, खनन, निर्माण और प्रबंधन आपके अनुकूल हैं। शास्त्र यहाँ शनि को बलवान मानते हैं। ईमानदारी आवश्यक है, क्योंकि शनि ईमानदार काम का फल देता है और शॉर्टकट का दंड।

दसवें भाव में आठवें भाव का स्वामी करियर में बदलाव ला सकता है। शोध, बीमा, खनन या जाँच-पड़ताल आपके अनुकूल हैं।

दसवें भाव में नौवें भाव का स्वामी मज़बूत राजयोग बनाता है (नौवें और दसवें भाव के स्वामी)। यह पद-प्रतिष्ठा, सफलता और सम्मान देता है।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) में और शनि भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 2 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 10 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। शनि भाव 10 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए वे विषय वज़न, ज़िम्मेदारी और टिकाऊ फल के साथ आते हैं।

भाव 10 के विषय:

- **सरकारी और आधिकारिक मामले** — क्या हो सकता है: सरकारी या आधिकारिक मामलों में अनुकूलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कागज़ात पूरे रखें और नियमों का सख्ती से पालन करें।
- **नौकरी और करियर में उन्नति** — क्या हो सकता है: उन्नति, पहचान और काम में एक कदम आगे बढ़ना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: गुणवत्ता से काम करें, कौशल बढ़ाते रहें और दूसरा प्रस्ताव हाथ में लिए बिना जल्दबाज़ी में नौकरी न छोड़ें।

भाव 8 के विषय:

- **जीवनसाथी की आर्थिक स्थिति** — क्या हो सकता है: जीवनसाथी के साधनों से सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: पैसों पर खुलकर बात करें और साझा खाते व ज़िम्मेदारियाँ स्पष्ट रखें।
- **अचानक बदलाव** — क्या हो सकता है: अप्रत्याशित सहायता और सकारात्मक मोड़। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: महत्वपूर्ण बातों के लिए एक छोटा आपातकालीन कोष और वैकल्पिक योजना रखें।

शनि – बुध: 31/08/2027 से 10/05/2030 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। बुध फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 1 और 4 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 12 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: यात्रा और विदेश से संबंध (शुभ), आध्यात्मिक जीवन (शुभ)।

बारहवें भाव में बुध बुद्धि को आध्यात्मिकता, शोध, विदेशी कामकाज या पर्दे के पीछे के काम की ओर मोड़ता है। शास्त्र गलतफ़हमी से होने वाले खर्च की चेतावनी देते हैं और कागज़ी कार्रवाई में सावधानी की सलाह देते हैं। ध्यान अति-सक्रिय मन को शांत करता है। विदेशी व्यापार या एकांत में लेखन फलदायी हो सकता है।

बारहवें भाव में लग्नेश विदेश में जीवन, आध्यात्मिक रुचियाँ और खर्च ला सकता है। आप विदेश, अस्पतालों या संस्थाओं में काम कर सकते हैं। स्वास्थ्य और खर्च में सावधानी की सलाह है।

बारहवें भाव में चौथे भाव का स्वामी विदेश में या जन्मस्थान से दूर निवास ला सकता है। संपत्ति और घर पर सोच-समझकर खर्च करें।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 5 (संतान, शिक्षा) में और शनि भाव 11 (आय, लाभ) में गोचर करते हैं। गुरु

SAMPLE

भाव 5 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 11 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 12 के विषय:

- **आध्यात्मिक उन्नति** — क्या हो सकता है: आंतरिक शांति, ध्यान और आध्यात्मिक प्रगति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ ध्यान करें और परिवार तथा मित्रों के संपर्क में रहें।
- **अस्पताल और छिपी चिंताएँ** — क्या हो सकता है: पुरानी चिंताओं से स्वास्थ्य-लाभ और मुक्ति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: जाँच जल्दी कराएँ और डॉक्टर से सलाह लें; छोटे लक्षणों को नज़रअंदाज़ न करें।

भाव 1 के विषय:

- **छवि और प्रतिष्ठा** — क्या हो सकता है: लोगों के बीच पहचान और अच्छी छवि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: वादे निभाएँ, विनम्रता से बोलें और दिखावे से बचें।
- **स्वास्थ्य और ऊर्जा** — क्या हो सकता है: बेहतर ऊर्जा, सहनशक्ति और जल्दी स्वस्थ होना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सोने और खाने का समय तय रखें, रोज़ व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। कोई भी लक्षण हो तो इंतज़ार करने के बजाय जल्दी डॉक्टर को दिखाएँ।

शनि – केतु: 10/05/2030 से 19/06/2031 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। केतु फिर अपनी राशि और राशि स्वामी के फल देते हैं, और आपकी कुंडली के भाव 11 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ)।

ग्यारहवें भाव में केतु लाभ देता है, प्रायः अप्रत्याशित, और विरक्ति के भाव के साथ इच्छाओं की पूर्ति। शास्त्र इसे अच्छी स्थिति मानते हैं। मित्र कम पर सच्चे हो सकते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में और शनि भाव 12 (खर्च, विदेश) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 6 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 12 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 11 के विषय:

- **बड़े भाई-बहन** — क्या हो सकता है: बड़े भाई-बहनों से सहयोग और अच्छी सलाह। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: उनका सम्मान करें और पैसों के मामले रिश्ते से अलग रखें।
- **इच्छाओं की पूर्ति** — क्या हो सकता है: लंबे समय से अटकी इच्छाएँ पूरी होने लगती हैं। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: यथार्थवादी लक्ष्य रखें और चरणबद्ध तरीके से आगे बढ़ें।

शनि – शुक्र: 19/06/2031 से 19/08/2034 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। शुक्र फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 5 और 12 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 12 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ), संतान (शुभ)।

बारहवें भाव में शुक्र को परंपरा से सुख-सुविधा, शय्या-सुख और विलास, यात्रा तथा कलाओं पर खर्च के लिए अच्छा माना जाता है। यह करुणा और आध्यात्मिक आनंद में रुचि भी देता है। शास्त्र बारहवें भाव को ऐसा भाव मानते हैं जहाँ शुक्र असामान्य रूप से अच्छा करता है। खर्च पर नियंत्रण रखें और छिपे भोग-विलास से बचें।

बारहवें भाव में पाँचवें भाव का स्वामी आध्यात्मिक रुचियाँ देता है और संतान या शिक्षा पर खर्च, या विदेश में पढ़ाई ला सकता है।

अपने ही भाव में बारहवें भाव का स्वामी आध्यात्मिक जीवन, विदेश में बसने और दान पर खर्च को सहारा देता है।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 8 (अचानक परिवर्तन, शोध) में और शनि भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 8 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 1 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

SAMPLE

भाव 12 के विषय:

- **लापरवाही से हानि** — क्या हो सकता है: किसी पुराने बोझ का अंत। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कीमती वस्तुएँ सुरक्षित रखें, बिल और समझौते जाँचें और आँख मूँदकर भरोसा न करें।
- **खर्च** — क्या हो सकता है: सुख-सुविधा, परिवार या अच्छे कार्यों पर होने वाला खर्च। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: बजट रखें, आवेग में खरीदारी से बचें और आपातकालीन कोष बनाए रखें।

भाव 5 के विषय:

- **प्रेम** — क्या हो सकता है: प्रेम में गर्मजोशी और खुशी। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: ईमानदार रहें, धीरे चलें और जल्दबाज़ी में प्रतिबद्धता न करें।
- **सट्टा और निवेश** — क्या हो सकता है: सही समझ से लाभ। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सट्टे और टिप्स से बचें। निवेश केवल योग्य वित्तीय सलाहकार की सलाह से करें, और कभी उधार के पैसे से नहीं।

शनि – सूर्य: 19/08/2034 से 01/08/2035 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। सूर्य फिर अपने भाव के विषय लाते हैं: ये भाव 3 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 1 में बैठे हैं। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (अधिकतर अनुकूल), स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (अधिकतर अनुकूल)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

पहले भाव में सूर्य होने से आपमें आत्म-बोध प्रबल होता है, व्यवहार में गरिमा होती है और नेतृत्व करने की इच्छा होती है। लोग आपको नोटिस करते हैं, और आप अपने पैरों पर खड़ा होना पसंद करते हैं। आत्मविश्वास और सम्मान की भावना आपकी शक्ति हैं; अभिमान, तेज़ गुस्सा और आलोचना के प्रति अधीरता वे कमज़ोरियाँ हैं जिन्हें संभालना है। शास्त्र इस स्थिति को अच्छी जीवन-शक्ति के साथ-साथ गरमी से जुड़ी परेशानियों, आँखों पर ज़ोर और कभी-कभी सिरदर्द से भी जोड़ते हैं। ज़िम्मेदारी के पदों पर आप अच्छा करते हैं, और ईमानदारी से काम करने पर सरकार या वरिष्ठों का सहयोग मिलने की संभावना है।

लग्न में तीसरे भाव का स्वामी साहस, आत्मविश्वास और संवाद की प्रतिभा देता है। आप उद्यमी हैं और पहल करने को तैयार रहते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) में और शनि भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 10 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 2 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 1 के विषय:

- **आत्मविश्वास और व्यक्तित्व** — क्या हो सकता है: अधिक आत्मविश्वास, प्रभावशाली उपस्थिति और लोगों का अच्छे अर्थ में ध्यान जाना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: प्रतिक्रिया देने से पहले रुकें, पहले सुनें और बड़े निर्णय एक रात सोचकर ही लें।
- **नई शुरुआत** — क्या हो सकता है: कुछ नया शुरू करने या तरीका बदलने के लिए अच्छा समय। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: पहले योजना बनाएँ, सलाह लें और छोटे स्तर से शुरू करें ताकि बड़ा करने से पहले परख सकें।

भाव 3 के विषय:

- **छोटे भाई-बहन** — क्या हो सकता है: छोटे भाई-बहनों से निकटता और सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: संपर्क में रहें, हिसाब रखे बिना मदद करें और संपत्ति या पैसों के मामले आपस में स्पष्ट रखें।
- **छोटी यात्राएँ** — क्या हो सकता है: उपयोगी और सुखद छोटी यात्राएँ। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: पहले से योजना बनाएँ, कागज़ात तैयार रखें और सावधानी से वाहन चलाएँ।

शनि – चंद्र: 01/08/2035 से 01/03/2037 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। चंद्र फिर अपने भाव के विषय लाते हैं: ये भाव 2 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 9 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ), धन और आर्थिक स्थिति (शुभ)।

SAMPLE

नौवें भाव में चंद्रमा धार्मिक, दयालु और भाग्यशाली स्वभाव देता है। आपको यात्रा, तीर्थ और सीखना अच्छा लगता है, और प्रायः माता या मातृतुल्य व्यक्तियों का सहारा मिलता है। शास्त्र इसे भाग्य और प्रतिष्ठा के लिए अच्छी स्थिति मानते हैं। जीवन के साथ आपकी मान्यताएँ विकसित हो सकती हैं। दान और गुरुजनों का आदर आपके भाग्य को बल देते हैं।

नौवें भाव में दूसरे भाव का स्वामी धन के लिए भाग्यशाली है। धन भाग्य, पिता, गुरुजनों या धार्मिक और शैक्षिक कार्यों से आता है।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 12 (खर्च, विदेश) में और शनि भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 12 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 2 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। शनि भाव 2 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए वे विषय वज़न, ज़िम्मेदारी और टिकाऊ फल के साथ आते हैं।

भाव 9 के विषय:

- **गुरु और मार्गदर्शक** — क्या हो सकता है: किसी अच्छे गुरु या मार्गदर्शक से मार्गदर्शन। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: गुरुजनों का सम्मान करें, बड़े निर्णयों से पहले उनकी सलाह लें और विनम्रता से सीखें।
- **धर्म और आस्था** — क्या हो सकता है: प्रार्थना, तीर्थ या किसी आध्यात्मिक मार्गदर्शन से शांति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: एक सरल दैनिक साधना रखें और आशीर्वाद के बदले पैसे माँगने वाले से सावधान रहें।

भाव 2 के विषय:

- **पारिवारिक जीवन** — क्या हो सकता है: घर में तालमेल, एकजुटता और सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: संभव हो तो साथ भोजन करें, ताने देने से बचें और रिश्तेदारों के बीच पैसों के मामले लिखित में तय करें।
- **वाणी और संवाद** — क्या हो सकता है: ऐसी बातें जिनका वज़न हो और लोग आपको सुनें। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: बोलने से पहले सोचें, बहस से बचें और महत्वपूर्ण बातें लिखित में रखें।

शनि – मंगल: 01/03/2037 से 10/04/2038 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। मंगल फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 6 और 11 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 3 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (शुभ), आध्यात्मिक जीवन (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी 6/8 संबंध में हैं, इसलिए महादशा और अंतर्दशा के विषय एक-दूसरे के विपरीत खिंच सकते हैं।

तीसरे भाव में मंगल उसकी सबसे अच्छी स्थितियों में से एक है। यह असाधारण साहस, पहल और प्रतिस्पर्धियों पर विजय की क्षमता देता है। खेल, सेना, तकनीकी काम, बिक्री या निडर प्रयास माँगने वाले किसी भी क्षेत्र में आप अच्छा कर सकते हैं। शास्त्र पराक्रम और अपने प्रयास से सफलता के लिए इस स्थिति की प्रशंसा करते हैं। भाई-बहनों से संबंध प्रतिस्पर्धी पर रक्षा करने वाले हो सकते हैं।

तीसरे भाव में छठे भाव का स्वामी विरोधियों को हराने का साहस देता है। विजय के लिए यह सामान्यतः अच्छी स्थिति है।

तीसरे भाव में ग्यारहवें भाव का स्वामी प्रयास, भाई-बहनों, संवाद और यात्रा से लाभ देता है।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) में और शनि भाव 3 (साहस, भाई-बहन) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 2 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 3 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। शनि भाव 3 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए वे विषय वज़न, ज़िम्मेदारी और टिकाऊ फल के साथ आते हैं।

भाव 3 के विषय:

- **पड़ोसी और आस-पास के लोग** — क्या हो सकता है: पड़ोसियों और आस-पास के लोगों से अच्छा सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: विनम्र रहें, गपशप से बचें और छोटी बातें जल्दी सुलझा लें।
- **साहस और प्रयास** — क्या हो सकता है: अतिरिक्त साहस और जो शुरू करें उसे पूरा करने की ऊर्जा। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: छोटे दैनिक लक्ष्य रखें और अगला काम शुरू करने से पहले एक काम पूरा करें।

भाव 6 के विषय:

- **क़ानूनी विवाद** — क्या हो सकता है: विवाद में अनुकूल परिणाम। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: समझौते को

SAMPLE

प्राथमिकता दें, सारे रिकॉर्ड रखें और योग्य वकील से सलाह लें।

- **कर्मचारी और सहायक** — क्या हो सकता है: वफ़ादार और उपयोगी सहायक या कर्मचारी। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: स्पष्ट निर्देश दें और व्यवहार निष्पक्ष तथा लिखित में रखें।

शनि – राहु: 10/04/2038 से 14/02/2041 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। राहु फिर अपनी राशि और राशि स्वामी के फल देते हैं, और आपकी कुंडली के भाव 5 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: संतान (शुभ), आध्यात्मिक जीवन (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी 6/8 संबंध में हैं, इसलिए महादशा और अंतर्दशा के विषय एक-दूसरे के विपरीत खिंच सकते हैं।

पाँचवें भाव में राहु असामान्य, आविष्कारशील बुद्धि और तकनीक, शोध या लीक से हटकर विषयों में रुचि देता है। शास्त्र संतान और सट्टे के मामले में सावधानी की सलाह देते हैं। पढ़ाई में शॉर्टकट से बचें। मौलिक सोच आपकी शक्ति है।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 3 (साहस, भाई-बहन) में और शनि भाव 4 (घर, माता) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 3 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 4 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 5 के विषय:

- **बुद्धि और भक्ति** — क्या हो सकता है: स्पष्ट सोच, अच्छी सलाह और शांति देने वाली भक्ति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: निर्णय कारण सहित लिख लें, और रोज़ थोड़ी प्रार्थना या मंत्र-साधना रखें।
- **संतान** — क्या हो सकता है: संतान के बारे में खुशी, प्रगति और अच्छी खबर। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: उन्हें धैर्य से समय दें, दबाव के बिना मार्गदर्शन करें और कुछ चिंताजनक लगे तो डॉक्टर या शिक्षक से जल्दी बात करें।

शनि – गुरु: 14/02/2041 से 28/08/2043 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। गुरु फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 7 और 10 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 6 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (शुभ), आध्यात्मिक जीवन (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

छठे भाव में गुरु समझदारी और न्यायपूर्ण व्यवहार से शत्रुओं पर विजय पाने में मदद करता है, और कानून, चिकित्सा, स्वास्थ्य सेवा और सेवा-कार्य में करियर को सहारा देता है। शास्त्र लिवर, वज़न और शुगर-संतुलन, तथा कर्ज़ के मामले में सावधानी का उल्लेख करते हैं। दूसरों की सेवा से आपको सम्मान मिलता है।

छठे भाव में सातवें भाव का स्वामी विवाह, साझेदारी और कानूनी मामलों में धैर्य और सावधानी माँगता है।

छठे भाव में दसवें भाव का स्वामी सेवा, चिकित्सा, कानून या प्रशासन में करियर देता है, साथ में काम में प्रतिस्पर्धा।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में और शनि भाव 5 (संतान, शिक्षा) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 6 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 5 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। गुरु भाव 6 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए इसके फलों को सहारा मिलता है और उनका लाभ उठाना आसान होता है।

भाव 6 के विषय:

- **प्रतिद्वंद्वी और प्रतिस्पर्धा** — क्या हो सकता है: प्रतिद्वंद्वियों और आलोचकों पर सफलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: शांत रहें, अपने काम का रिकॉर्ड रखें और गपशप से बचें।
- **कर्ज़ और ऋण** — क्या हो सकता है: कर्ज़ चुकाने और बकाया निपटाने का अवसर। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: भुगतान की योजना पहले से बनाएँ, नया कर्ज़ न लें और देरी की आशंका हो तो ऋणदाता से जल्दी बात करें।

भाव 7 के विषय:

- **समझौते और अनुबंध** — क्या हो सकता है: अनुकूल समझौते और सहज बातचीत। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: हर

SAMPLE

धारा पढ़ें, हस्ताक्षर से पहले प्रश्न पूछें और प्रतियाँ रखें।

- **जीवनसाथी और वैवाहिक जीवन** — क्या हो सकता है: जीवनसाथी से समझ, प्रेम और सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ धैर्य से बात करें, निजी बातों में बाहर के लोगों को न आने दें और हर सप्ताह साथ समय तय करें।

बुध महादशा: 28/08/2043 से 27/08/2060 तक

बुध की दशा पढ़ाई, व्यापार, लेखन, संवाद और समझदारी भरी योजना के लिए अनुकूल है। व्यवसाय के अवसर और नए कौशल सामने आते हैं। यह अध्ययन करने, बातचीत से सौदे तय करने और व्यवस्थित होने का समय है; नसों को शांत रखें।

बुध आपके भाव 1 और 4 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत; घर, माता, संपत्ति, वाहन और मन की शांति) का स्वामी है, और यह कठिन भाव (6, 8 या 12) में है, इसलिए इसके विषयों में सावधानी और धैर्य चाहिए — भाव 12, जो खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद का भाव है। यह मित्र राशि में है, जो इसके फलों को सहारा देती है।

कुल स्वर: शुभ। यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: शिक्षा और विद्या (शुभ), स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (शुभ), घर, संपत्ति और वाहन (शुभ)।

सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: बुध (28/08/2043), शुक्र (21/01/2047)। जिन अंतर्दशाओं में अधिक सावधानी चाहिए: सूर्य (21/11/2049), मंगल (27/02/2052)।

बारहवें भाव में बुध बुद्धि को आध्यात्मिकता, शोध, विदेशी कामकाज या पर्दे के पीछे के काम की ओर मोड़ता है। शास्त्र गलतफ़हमी से होने वाले खर्च की चेतावनी देते हैं और कागज़ी कार्रवाई में सावधानी की सलाह देते हैं। ध्यान अति-सक्रिय मन को शांत करता है। विदेशी व्यापार या एकांत में लेखन फलदायी हो सकता है।

बारहवें भाव में लग्नेश विदेश में जीवन, आध्यात्मिक रुचियाँ और खर्च ला सकता है। आप विदेश, अस्पतालों या संस्थाओं में काम कर सकते हैं। स्वास्थ्य और खर्च में सावधानी की सलाह है।

बारहवें भाव में चौथे भाव का स्वामी विदेश में या जन्मस्थान से दूर निवास ला सकता है। संपत्ति और घर पर सोच-समझकर खर्च करें।

भाव 12 के विषय:

- **विदेश और यात्रा** — क्या हो सकता है: विदेश-यात्रा, पढ़ाई या काम के अवसर। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कागज़ात व्यवस्थित रखें और केवल अधिकृत एजेंटों का उपयोग करें।
- **नींद और विश्राम** — क्या हो सकता है: गहरी नींद और शांत रातें। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सोने का समय तय रखें, सोने से पहले स्क्रीन से बचें और हल्का रात्रि-भोजन करें।
- **आध्यात्मिक उन्नति** — क्या हो सकता है: आंतरिक शांति, ध्यान और आध्यात्मिक प्रगति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ ध्यान करें और परिवार तथा मित्रों के संपर्क में रहें।

भाव 1 के विषय:

- **छवि और प्रतिष्ठा** — क्या हो सकता है: लोगों के बीच पहचान और अच्छी छवि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: वादे निभाएँ, विनम्रता से बोलें और दिखावे से बचें।
- **स्वास्थ्य और ऊर्जा** — क्या हो सकता है: बेहतर ऊर्जा, सहनशक्ति और जल्दी स्वस्थ होना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सोने और खाने का समय तय रखें, रोज़ व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। कोई भी लक्षण हो तो इंतज़ार करने के बजाय जल्दी डॉक्टर को दिखाएँ।
- **आत्मविश्वास और व्यक्तित्व** — क्या हो सकता है: अधिक आत्मविश्वास, प्रभावशाली उपस्थिति और लोगों का अच्छे अर्थ में ध्यान जाना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: प्रतिक्रिया देने से पहले रुकें, पहले सुनें और बड़े निर्णय एक रात सोचकर ही लें।

भाव 4 के विषय:

- **वाहन** — क्या हो सकता है: अच्छा वाहन खरीदने या उसका सुख लेने का अवसर। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: वाहन की सर्विस समय पर कराएँ, गति-सीमा में चलाएँ और बीमा चालू रखें।

SAMPLE

- **मन की शांति** — क्या हो सकता है: शांत मन और संतोष। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ कुछ समय शांत बैठें, बाहर टहलें और पूजा या ध्यान जारी रखें।
- **प्रारंभिक शिक्षा और सुख-सुविधाएँ** — क्या हो सकता है: सुख-सुविधा, सीखना और स्थिर जीवन। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: पढ़ाई और आराम के लिए एक तय जगह और समय रखें।

बुध – बुध: 28/08/2043 से 24/01/2046 तक

महादशा स्वामी की अपनी ही यह अंतर्दशा उसके फलों को और गहरा करती है। बुध फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 1 और 4 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 12 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: शिक्षा और विद्या (शुभ), स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

बारहवें भाव में लग्नेश विदेश में जीवन, आध्यात्मिक रुचियाँ और खर्च ला सकता है। आप विदेश, अस्पतालों या संस्थाओं में काम कर सकते हैं। स्वास्थ्य और खर्च में सावधानी की सलाह है।

बारहवें भाव में चौथे भाव का स्वामी विदेश में या जन्मस्थान से दूर निवास ला सकता है। संपत्ति और घर पर सोच-समझकर खर्च करें।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 8 (अचानक परिवर्तन, शोध) में और शनि भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 8 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 6 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 12 के विषय:

- **अस्पताल और छिपी चिंताएँ** — क्या हो सकता है: पुरानी चिंताओं से स्वास्थ्य-लाभ और मुक्ति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: जाँच जल्दी कराएँ और डॉक्टर से सलाह लें; छोटे लक्षणों को नज़रअंदाज़ न करें।
- **लापरवाही से हानि** — क्या हो सकता है: किसी पुराने बोझ का अंत। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कीमती वस्तुएँ सुरक्षित रखें, बिल और समझौते जाँचें और आँख मूँदकर भरोसा न करें।

भाव 1 के विषय:

- **नई शुरुआत** — क्या हो सकता है: कुछ नया शुरू करने या तरीका बदलने के लिए अच्छा समय। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: पहले योजना बनाएँ, सलाह लें और छोटे स्तर से शुरू करें ताकि बड़ा करने से पहले परख सकें।
- **छवि और प्रतिष्ठा** — क्या हो सकता है: लोगों के बीच पहचान और अच्छी छवि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: वादे निभाएँ, विनम्रता से बोलें और दिखावे से बचें।

बुध – केतु: 24/01/2046 से 21/01/2047 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। केतु फिर अपनी राशि और राशि स्वामी के फल देते हैं, और आपकी कुंडली के भाव 11 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: घर, संपत्ति और वाहन (शुभ), शिक्षा और विद्या (शुभ)।

ग्यारहवें भाव में केतु लाभ देता है, प्रायः अप्रत्याशित, और विरक्ति के भाव के साथ इच्छाओं की पूर्ति। शास्त्र इसे अच्छी स्थिति मानते हैं। मित्र कम पर सच्चे हो सकते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) में और शनि भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 10 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 6 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 11 के विषय:

- **समूह और संगठन** — क्या हो सकता है: समूहों, संगठनों और समुदायों से सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: समूहों के झगड़ों से दूर रहें और अपना समय वहीं दें जहाँ उसकी कद्र हो।
- **आय और लाभ** — क्या हो सकता है: आय, बोनस या धन के नए स्रोतों में वृद्धि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: अपेक्षित आय पर पहले से खर्च न करें और बकाया का साफ़ रिकॉर्ड रखें।

SAMPLE

बुध – शुक्र: 21/01/2047 से 21/11/2049 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। शुक्र फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 5 और 12 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 12 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: यात्रा और विदेश से संबंध (शुभ), शिक्षा और विद्या (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

बारहवें भाव में पाँचवें भाव का स्वामी आध्यात्मिक रुचियाँ देता है और संतान या शिक्षा पर खर्च, या विदेश में पढ़ाई ला सकता है।

अपने ही भाव में बारहवें भाव का स्वामी आध्यात्मिक जीवन, विदेश में बसने और दान पर खर्च को सहारा देता है।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 12 (खर्च, विदेश) में और शनि भाव 7 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 12 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 7 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। गुरु भाव 12 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए इसके फलों को सहारा मिलता है और उनका लाभ उठाना आसान होता है।

भाव 12 के विषय:

- **खर्च** — क्या हो सकता है: सुख-सुविधा, परिवार या अच्छे कार्यों पर होने वाला खर्च। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: बजट रखें, आवेग में खरीदारी से बचें और आपातकालीन कोष बनाए रखें।
- **विदेश और यात्रा** — क्या हो सकता है: विदेश-यात्रा, पढ़ाई या काम के अवसर। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कागज़ात व्यवस्थित रखें और केवल अधिकृत एजेंटों का उपयोग करें।

भाव 5 के विषय:

- **शिक्षा और पढ़ाई** — क्या हो सकता है: अच्छी एकाग्रता और पढ़ाई व परीक्षा में सफलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: तय समय-सारणी अपनाएँ, छोटे केंद्रित सत्रों में पढ़ें और फ़ोन दूर रखें।
- **रचनात्मकता और प्रतिभा** — क्या हो सकता है: बहते विचार और ध्यान में आने वाली प्रतिभा। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ थोड़ा तय समय अभ्यास करें और छोटे-छोटे काम पूरे करें।

बुध – सूर्य: 21/11/2049 से 27/09/2050 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। सूर्य फिर अपने भाव के विषय लाते हैं: ये भाव 3 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 1 में बैठे हैं। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (अधिकतर अनुकूल), यात्रा और विदेश से संबंध (अधिकतर अनुकूल)।

लग्न में तीसरे भाव का स्वामी साहस, आत्मविश्वास और संवाद की प्रतिभा देता है। आप उद्यमी हैं और पहल करने को तैयार रहते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) में और शनि भाव 8 (अचानक परिवर्तन, शोध) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 2 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 8 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 1 के विषय:

- **आत्मविश्वास और व्यक्तित्व** — क्या हो सकता है: अधिक आत्मविश्वास, प्रभावशाली उपस्थिति और लोगों का अच्छे अर्थ में ध्यान जाना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: प्रतिक्रिया देने से पहले रुकें, पहले सुनें और बड़े निर्णय एक रात सोचकर ही लें।
- **नई शुरुआत** — क्या हो सकता है: कुछ नया शुरू करने या तरीका बदलने के लिए अच्छा समय। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: पहले योजना बनाएँ, सलाह लें और छोटे स्तर से शुरू करें ताकि बड़ा करने से पहले परख सकें।

भाव 3 के विषय:

- **लेखन, मीडिया और कौशल** — क्या हो सकता है: लेखन, बिक्री, मीडिया, फ़ोन-संपर्क और कौशल-विकास में सफलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: संदेश और कागज़ात भेजने से पहले दोबारा जाँचें और प्रतियाँ रखें।
- **छोटे भाई-बहन** — क्या हो सकता है: छोटे भाई-बहनों से निकटता और सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: संपर्क में रहें, हिसाब रखे बिना मदद करें और संपत्ति या पैसों के मामले आपस में स्पष्ट रखें।

SAMPLE

बुध – चंद्र: 27/09/2050 से 27/02/2052 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। चंद्र फिर अपने भाव के विषय लाते हैं: ये भाव 2 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 9 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (शुभ), घर, संपत्ति और वाहन (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

नौवें भाव में दूसरे भाव का स्वामी धन के लिए भाग्यशाली है। धन भाग्य, पिता, गुरुजनों या धार्मिक और शैक्षिक कार्यों से आता है।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 3 (साहस, भाई-बहन) में और शनि भाव 8 (अचानक परिवर्तन, शोध) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 3 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 8 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 9 के विषय:

- **लंबी यात्राएँ** — क्या हो सकता है: लाभकारी लंबी यात्रा, तीर्थ या विदेश-यात्रा। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: पहले से योजना और बुकिंग करें, बीमा और कागज़ात तैयार रखें।
- **उच्च शिक्षा** — क्या हो सकता है: उच्च शिक्षा, शोध या पाठ्यक्रमों में प्रवेश या सफलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: जल्दी आवेदन करें और वैकल्पिक विकल्प तैयार रखें।

भाव 2 के विषय:

- **भोजन और खान-पान की आदतें** — क्या हो सकता है: अच्छे भोजन और पारिवारिक भोजन का आनंद। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: समय पर खाएँ, सादा भोजन रखें और रात में भारी भोजन से बचें।
- **पारिवारिक संपत्ति और कीमती वस्तुएँ** — क्या हो सकता है: पारिवारिक संपत्ति, सोने या कीमती वस्तुओं में वृद्धि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कीमती चीज़ें सुरक्षित रखें, कागज़ात व्यवस्थित रखें और पारिवारिक संपत्ति पर शांति से खुलकर बात करें।

बुध – मंगल: 27/02/2052 से 23/02/2053 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। मंगल फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 6 और 11 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 3 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (शुभ), घर, संपत्ति और वाहन (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

तीसरे भाव में छठे भाव का स्वामी विरोधियों को हराने का साहस देता है। विजय के लिए यह सामान्यतः अच्छी स्थिति है।

तीसरे भाव में ग्यारहवें भाव का स्वामी प्रयास, भाई-बहनों, संवाद और यात्रा से लाभ देता है।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 4 (घर, माता) में और शनि भाव 9 (भाग्य, पिता) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 4 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 9 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 3 के विषय:

- **पड़ोसी और आस-पास के लोग** — क्या हो सकता है: पड़ोसियों और आस-पास के लोगों से अच्छा सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: विनम्र रहें, गपशप से बचें और छोटी बातें जल्दी सुलझा लें।
- **साहस और प्रयास** — क्या हो सकता है: अतिरिक्त साहस और जो शुरू करें उसे पूरा करने की ऊर्जा। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: छोटे दैनिक लक्ष्य रखें और अगला काम शुरू करने से पहले एक काम पूरा करें।

भाव 6 के विषय:

- **स्वास्थ्य और दैनिक दिनचर्या** — क्या हो सकता है: अच्छी रिकवरी और दिनचर्या में अनुशासन। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: हल्का खाएँ, व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। डॉक्टर को जल्दी दिखाएँ; केवल उपायों पर निर्भर न रहें।
- **सेवा और दैनिक कार्य** — क्या हो सकता है: मेहनत और सेवा की सराहना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: काम की

SAMPLE

प्राथमिकता तय करें, जहाँ हो सके सौंपें और ठीक से विश्राम लें।

बुध – राहु: 23/02/2053 से 12/09/2055 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। राहु फिर अपनी राशि और राशि स्वामी के फल देते हैं, और आपकी कुंडली के भाव 5 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: शिक्षा और विद्या (शुभ), यात्रा और विदेश से संबंध (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी 6/8 संबंध में हैं, इसलिए महादशा और अंतर्दशा के विषय एक-दूसरे के विपरीत खिंच सकते हैं।

पाँचवें भाव में राहु असामान्य, आविष्कारशील बुद्धि और तकनीक, शोध या लीक से हटकर विषयों में रुचि देता है। शास्त्र संतान और सट्टे के मामले में सावधानी की सलाह देते हैं। पढ़ाई में शॉर्टकट से बचें। मौलिक सोच आपकी शक्ति है।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में और शनि भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 6 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 10 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 5 के विषय:

- **सट्टा और निवेश** — क्या हो सकता है: सही समझ से लाभ। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सट्टे और टिप्स से बचें। निवेश केवल योग्य वित्तीय सलाहकार की सलाह से करें, और कभी उधार के पैसे से नहीं।
- **बुद्धि और भक्ति** — क्या हो सकता है: स्पष्ट सोच, अच्छी सलाह और शांति देने वाली भक्ति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: निर्णय कारण सहित लिख लें, और रोज़ थोड़ी प्रार्थना या मंत्र-साधना रखें।

बुध – गुरु: 12/09/2055 से 18/12/2057 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। गुरु फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 7 और 10 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 6 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: शिक्षा और विद्या (शुभ), स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

छठे भाव में सातवें भाव का स्वामी विवाह, साझेदारी और कानूनी मामलों में धैर्य और सावधानी माँगता है।

छठे भाव में दसवें भाव का स्वामी सेवा, चिकित्सा, कानून या प्रशासन में करियर देता है, साथ में काम में प्रतिस्पर्धा।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 8 (अचानक परिवर्तन, शोध) में और शनि भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 8 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 10 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। शनि भाव 10 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए वे विषय वज़न, ज़िम्मेदारी और टिकाऊ फल के साथ आते हैं।

भाव 6 के विषय:

- **क़ानूनी विवाद** — क्या हो सकता है: विवाद में अनुकूल परिणाम। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: समझौते को प्राथमिकता दें, सारे रिकॉर्ड रखें और योग्य वकील से सलाह लें।
- **कर्मचारी और सहायक** — क्या हो सकता है: वफ़ादार और उपयोगी सहायक या कर्मचारी। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: स्पष्ट निर्देश दें और व्यवहार निष्पक्ष तथा लिखित में रखें।

भाव 7 के विषय:

- **विवाह की संभावनाएँ** — क्या हो सकता है: अच्छे प्रस्ताव और विवाह की बातचीत में प्रगति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: व्यक्ति और परिवार को जानने के लिए समय लें, शांति से अनुकूलता जाँचें और जल्दबाज़ी न करें।
- **व्यापारिक साझेदारी** — क्या हो सकता है: लाभदायक गठबंधन और भरोसेमंद साझेदार। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: हर शर्त लिखित में रखें और हस्ताक्षर से पहले क़ानूनी सलाह लें।

SAMPLE

बुध – शनि: 18/12/2057 से 27/08/2060 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। शनि फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 8 और 9 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 10 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: यात्रा और विदेश से संबंध (शुभ), शिक्षा और विद्या (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

दसवें भाव में आठवें भाव का स्वामी करियर में बदलाव ला सकता है। शोध, बीमा, खनन या जाँच-पड़ताल आपके अनुकूल हैं।

दसवें भाव में नौवें भाव का स्वामी मज़बूत राजयोग बनाता है (नौवें और दसवें भाव के स्वामी)। यह पद-प्रतिष्ठा, सफलता और सम्मान देता है।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 11 (आय, लाभ) में और शनि भाव 11 (आय, लाभ) में गोचर करते हैं। दोनों धीमे ग्रह भाव 11 पर साथ काम करते हैं, इसलिए इन विषयों पर बहुत ध्यान रहता है और फल तीव्रता से महसूस होते हैं।

भाव 10 के विषय:

- **व्यापार और पेशा** — क्या हो सकता है: व्यापार का विस्तार और बाज़ार में बेहतर नाम। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: खर्च पर नियंत्रण रखें, हिसाब साफ़ रखें और विस्तार से पहले विशेषज्ञ की सलाह लें।
- **अधिकारी और अधिकारधारी लोग** — क्या हो सकता है: अधिकारियों और अधिकारधारी लोगों का सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: स्पष्ट संवाद करें, समय पर काम पूरा करें और सार्वजनिक बहस से बचें।

भाव 8 के विषय:

- **विरासत और साझा धन** — क्या हो सकता है: विरासत, बीमा या ससुराल पक्ष से लाभ। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: वसीयत और कागज़ात स्पष्ट रखें और किसी भी समझौते से पहले क़ानूनी सलाह लें।
- **शोध और गूढ़ विषय** — क्या हो सकता है: गहरा शोध, अंतर्दृष्टि और गूढ़ विषयों के अध्ययन में सफलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: नियमित दिनचर्या रखें और अति या जोखिम भरी साधनाओं से बचें।

केतु महादशा: 27/08/2060 से 28/08/2067 तक

केतु की दशा ध्यान को भीतर की ओर — आध्यात्मिकता, शोध और त्याग की ओर — मोड़ती है। अचानक परिवर्तन पुराने ढर्रे तोड़ सकते हैं। यह ध्यान, सादगी और स्वास्थ्य की सावधानीपूर्वक देखभाल का समय है।

केतु छाया ग्रह है, जो अपनी राशि और उसके स्वामी मंगल के अनुसार फल देता है, और यह उपचय भाव (3, 6, 10 या 11) में है, जिसके फल समय के साथ प्रयास से बढ़ते हैं — भाव 11, जो आय, लाभ, मित्र और इच्छापूर्ति का भाव है। यह मित्र राशि में है, जो इसके फलों को सहारा देती है।

कुल स्वर: अधिकतर अनुकूल। यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (अधिकतर अनुकूल)।

सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: शनि (22/07/2065), बुध (31/08/2066)। जिन अंतर्दशाओं में अधिक सावधानी चाहिए: सूर्य (26/03/2062), मंगल (02/03/2063)।

ग्यारहवें भाव में केतु लाभ देता है, प्रायः अप्रत्याशित, और विरक्ति के भाव के साथ इच्छाओं की पूर्ति। शास्त्र इसे अच्छी स्थिति मानते हैं। मित्र कम पर सच्चे हो सकते हैं।

भाव 11 के विषय:

- **मित्र और संपर्क** — क्या हो सकता है: सहायक मित्र और उपयोगी संपर्क। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: संगति सोच-समझकर चुनें और मित्रों को पैसे उधार न दें, न ही उनकी गारंटी लें।
- **बड़े भाई-बहन** — क्या हो सकता है: बड़े भाई-बहनों से सहयोग और अच्छी सलाह। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: उनका सम्मान करें और पैसों के मामले रिश्ते से अलग रखें।
- **इच्छाओं की पूर्ति** — क्या हो सकता है: लंबे समय से अटकी इच्छाएँ पूरी होने लगती हैं। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: यथार्थवादी लक्ष्य रखें और चरणबद्ध तरीके से आगे बढ़ें।

SAMPLE

केतु – केतु: 27/08/2060 से 24/01/2061 तक

महादशा स्वामी की अपनी ही यह अंतर्दशा उसके फलों को और गहरा करती है। केतु फिर अपनी राशि और राशि स्वामी के फल देते हैं, और आपकी कुंडली के भाव 11 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत) में और शनि भाव 12 (खर्च, विदेश) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 1 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 12 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 11 के विषय:

- **समूह और संगठन** — क्या हो सकता है: समूहों, संगठनों और समुदायों से सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: समूहों के झगड़ों से दूर रहें और अपना समय वहीं दें जहाँ उसकी कद्र हो।
- **आय और लाभ** — क्या हो सकता है: आय, बोनस या धन के नए स्रोतों में वृद्धि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: अपेक्षित आय पर पहले से खर्च न करें और बकाया का साफ़ रिकॉर्ड रखें।

केतु – शुक्र: 24/01/2061 से 26/03/2062 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। शुक्र फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 5 और 12 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 12 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ)।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) में और शनि भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 2 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 1 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 12 के विषय:

- **नींद और विश्राम** — क्या हो सकता है: गहरी नींद और शांत रातें। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सोने का समय तय रखें, सोने से पहले स्क्रीन से बचें और हल्का रात्रि-भोजन करें।
- **आध्यात्मिक उन्नति** — क्या हो सकता है: आंतरिक शांति, ध्यान और आध्यात्मिक प्रगति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ ध्यान करें और परिवार तथा मित्रों के संपर्क में रहें।

भाव 5 के विषय:

- **प्रेम** — क्या हो सकता है: प्रेम में गर्मजोशी और खुशी। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: ईमानदार रहें, धीरे चलें और जल्दबाज़ी में प्रतिबद्धता न करें।
- **संतान** — क्या हो सकता है: संतान के बारे में खुशी, प्रगति और अच्छी खबर। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: उन्हें धैर्य से समय दें, दबाव के बिना मार्गदर्शन करें और कुछ चिंताजनक लगे तो डॉक्टर या शिक्षक से जल्दी बात करें।

केतु – सूर्य: 26/03/2062 से 01/08/2062 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। सूर्य फिर अपने भाव के विषय लाते हैं: ये भाव 3 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 1 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) में और शनि भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 2 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 1 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। शनि भाव 1 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए वे विषय वज़न, ज़िम्मेदारी और टिकाऊ फल के साथ आते हैं।

भाव 1 के विषय:

- **स्वास्थ्य और ऊर्जा** — क्या हो सकता है: बेहतर ऊर्जा, सहनशक्ति और जल्दी स्वस्थ होना; कठिन पक्ष में, थकान, कमज़ोर प्रतिरोधक क्षमता या छोटी-मोटी स्वास्थ्य शिकायतें। क्या सहायक है: सोने और खाने का समय तय रखें, रोज़ व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। कोई भी लक्षण हो तो इंतज़ार करने के बजाय जल्दी डॉक्टर को दिखाएँ।

SAMPLE

- **आत्मविश्वास और व्यक्तित्व** — क्या हो सकता है: अधिक आत्मविश्वास, प्रभावशाली उपस्थिति और लोगों का अच्छे अर्थ में ध्यान जाना; कठिन पक्ष में, अधीरता, अहंकार का टकराव या स्वयं पर संदेह। क्या सहायक है: प्रतिक्रिया देने से पहले रुकें, पहले सुनें और बड़े निर्णय एक रात सोचकर ही लें।

भाव 3 के विषय:

- **छोटी यात्राएँ** — क्या हो सकता है: उपयोगी और सुखद छोटी यात्राएँ; कठिन पक्ष में, यात्रा में देरी या छोटी-मोटी असुविधाएँ। क्या सहायक है: पहले से योजना बनाएँ, कागज़ात तैयार रखें और सावधानी से वाहन चलाएँ।
- **लेखन, मीडिया और कौशल** — क्या हो सकता है: लेखन, बिक्री, मीडिया, फ़ोन-संपर्क और कौशल-विकास में सफलता; कठिन पक्ष में, संवाद में गड़बड़ी या कागज़ खो जाना। क्या सहायक है: संदेश और कागज़ात भेजने से पहले दोबारा जाँचें और प्रतियाँ रखें।

केतु – चंद्र: 01/08/2062 से 02/03/2063 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। चंद्र फिर अपने भाव के विषय लाते हैं: ये भाव 2 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 9 में बैठे हैं। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: धन और आर्थिक स्थिति (अधिकतर अनुकूल), आध्यात्मिक जीवन (अधिकतर अनुकूल)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 3 (साहस, भाई-बहन) में और शनि भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 3 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 1 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 9 के विषय:

- **पिता** — क्या हो सकता है: पिता या पिता समान व्यक्तियों से अच्छी खबर, सहयोग या आशीर्वाद। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: उनसे अक्सर बात करें, पुरानी बहसों से बचें और उनकी नियमित स्वास्थ्य जाँच न छूटे यह देखें।
- **गुरु और मार्गदर्शक** — क्या हो सकता है: किसी अच्छे गुरु या मार्गदर्शक से मार्गदर्शन। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: गुरुजनों का सम्मान करें, बड़े निर्णयों से पहले उनकी सलाह लें और विनम्रता से सीखें।

भाव 2 के विषय:

- **बचत और हाथ में धन** — क्या हो सकता है: धन का नियमित आना और बेहतर बचत। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: मासिक बजट रखें, पहले बचत करें फिर खर्च करें। निवेश या उधार देने से पहले योग्य वित्तीय सलाहकार से सलाह लें।
- **पारिवारिक जीवन** — क्या हो सकता है: घर में तालमेल, एकजुटता और सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: संभव हो तो साथ भोजन करें, ताने देने से बचें और रिश्तेदारों के बीच पैसों के मामले लिखित में तय करें।

केतु – मंगल: 02/03/2063 से 29/07/2063 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। मंगल फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 6 और 11 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 3 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: धन और आर्थिक स्थिति (मिश्रित), घर, संपत्ति और वाहन (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 3 (साहस, भाई-बहन) में और शनि भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 3 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 1 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। गुरु भाव 3 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए इसके फलों को सहारा मिलता है और उनका लाभ उठाना आसान होता है।

भाव 3 के विषय:

- **पड़ोसी और आस-पास के लोग** — क्या हो सकता है: पड़ोसियों और आस-पास के लोगों से अच्छा सहयोग; कठिन पक्ष में, पड़ोसियों या सहकर्मियों से छोटे झगड़े। क्या सहायक है: विनम्र रहें, गपशप से बचें और छोटी बातें जल्दी सुलझा लें।
- **साहस और प्रयास** — क्या हो सकता है: अतिरिक्त साहस और जो शुरू करें उसे पूरा करने की ऊर्जा; कठिन पक्ष में, बिखरे प्रयास या हिचकिचाहट। क्या सहायक है: छोटे दैनिक लक्ष्य रखें और अगला काम शुरू करने से पहले एक काम पूरा करें।

SAMPLE

भाव 6 के विषय:

- **प्रतिद्वंद्वी और प्रतिस्पर्धा** — क्या हो सकता है: प्रतिद्वंद्वियों और आलोचकों पर सफलता; कठिन पक्ष में, कड़ा विरोध या दफ़्तर की राजनीति। क्या सहायक है: शांत रहें, अपने काम का रिकॉर्ड रखें और गपशप से बचें।
- **कर्ज़ और ऋण** — क्या हो सकता है: कर्ज़ चुकाने और बकाया निपटाने का अवसर; कठिन पक्ष में, कर्ज़ या किस्तों का दबाव। क्या सहायक है: भुगतान की योजना पहले से बनाएँ, नया कर्ज़ न लें और देरी की आशंका हो तो ऋणदाता से जल्दी बात करें।

केतु – राहु: 29/07/2063 से 15/08/2064 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। राहु फिर अपनी राशि और राशि स्वामी के फल देते हैं, और आपकी कुंडली के भाव 5 में बैठे हैं। स्वर: अधिकतर अनुकूल। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 4 (घर, माता) में और शनि भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 4 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 2 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 5 के विषय:

- **शिक्षा और पढ़ाई** — क्या हो सकता है: अच्छी एकाग्रता और पढ़ाई व परीक्षा में सफलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: तय समय-सारणी अपनाएँ, छोटे केंद्रित सत्रों में पढ़ें और फ़ोन दूर रखें।
- **रचनात्मकता और प्रतिभा** — क्या हो सकता है: बहते विचार और ध्यान में आने वाली प्रतिभा। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ थोड़ा तय समय अभ्यास करें और छोटे-छोटे काम पूरे करें।

केतु – गुरु: 15/08/2064 से 22/07/2065 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। गुरु फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 7 और 10 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 6 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी 6/8 संबंध में हैं, इसलिए महादशा और अंतर्दशा के विषय एक-दूसरे के विपरीत खिंच सकते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 5 (संतान, शिक्षा) में और शनि भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 5 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 2 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 6 के विषय:

- **स्वास्थ्य और दैनिक दिनचर्या** — क्या हो सकता है: अच्छी रिकवरी और दिनचर्या में अनुशासन; कठिन पक्ष में, पाचन, तनाव से जुड़ी या बार-बार होने वाली छोटी शिकायतें। क्या सहायक है: हल्का खाएँ, व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। डॉक्टर को जल्दी दिखाएँ; केवल उपायों पर निर्भर न रहें।
- **सेवा और दैनिक कार्य** — क्या हो सकता है: मेहनत और सेवा की सराहना; कठिन पक्ष में, काम का अधिक बोझ और थकान। क्या सहायक है: काम की प्राथमिकता तय करें, जहाँ हो सके सौंपें और ठीक से विश्राम लें।

भाव 7 के विषय:

- **ग्राहक और जनता से व्यवहार** — क्या हो सकता है: ग्राहकों, क्लाइंट और जनता से अच्छा प्रतिसाद; कठिन पक्ष में, कठिन ग्राहक या सार्वजनिक आलोचना। क्या सहायक है: विनम्र रहें, वचन निभाएँ और समझौतों का उचित रिकॉर्ड रखें।
- **समझौते और अनुबंध** — क्या हो सकता है: अनुकूल समझौते और सहज बातचीत; कठिन पक्ष में, शर्तों पर देरी या असहमति। क्या सहायक है: हर धारा पढ़ें, हस्ताक्षर से पहले प्रश्न पूछें और प्रतियाँ रखें।

केतु – शनि: 22/07/2065 से 31/08/2066 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। शनि फिर अपने भावों के विषय लाते हैं:

SAMPLE

ये भाव 8 और 9 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 10 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ)।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में और शनि भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 6 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 2 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 10 के विषय:

- **प्रतिष्ठा और सार्वजनिक छवि** — क्या हो सकता है: प्रतिष्ठा और सम्मान में वृद्धि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: आचरण निर्दोष रखें और ऑनलाइन कुछ भी डालने से पहले दो बार सोचें।
- **सरकारी और आधिकारिक मामले** — क्या हो सकता है: सरकारी या आधिकारिक मामलों में अनुकूलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कागज़ात पूरे रखें और नियमों का सख्ती से पालन करें।

भाव 8 के विषय:

- **स्वास्थ्य और सुरक्षा** — क्या हो सकता है: बीमारी के दौर के बाद स्वास्थ्य-लाभ। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: नियमित जाँच कराएँ, जोखिम भरी गतिविधियों से बचें और सावधानी से वाहन चलाएँ व यात्रा करें। डॉक्टर को जल्दी दिखाएँ।
- **जीवनसाथी की आर्थिक स्थिति** — क्या हो सकता है: जीवनसाथी के साधनों से सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: पैसों पर खुलकर बात करें और साझा खाते व ज़िम्मेदारियाँ स्पष्ट रखें।

केतु – बुध: 31/08/2066 से 28/08/2067 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। बुध फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 1 और 4 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 12 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: घर, संपत्ति और वाहन (शुभ)।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 7 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार) में और शनि भाव 3 (साहस, भाई-बहन) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 7 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 3 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 12 के विषय:

- **अस्पताल और छिपी चिंताएँ** — क्या हो सकता है: पुरानी चिंताओं से स्वास्थ्य-लाभ और मुक्ति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: जाँच जल्दी कराएँ और डॉक्टर से सलाह लें; छोटे लक्षणों को नज़रअंदाज़ न करें।
- **लापरवाही से हानि** — क्या हो सकता है: किसी पुराने बोझ का अंत। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कीमती वस्तुएँ सुरक्षित रखें, बिल और समझौते जाँचें और आँख मूँदकर भरोसा न करें।

भाव 1 के विषय:

- **छवि और प्रतिष्ठा** — क्या हो सकता है: लोगों के बीच पहचान और अच्छी छवि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: वादे निभाएँ, विनम्रता से बोलें और दिखावे से बचें।
- **स्वास्थ्य और ऊर्जा** — क्या हो सकता है: बेहतर ऊर्जा, सहनशक्ति और जल्दी स्वस्थ होना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सोने और खाने का समय तय रखें, रोज़ व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। कोई भी लक्षण हो तो इंतज़ार करने के बजाय जल्दी डॉक्टर को दिखाएँ।

शुक्र महादशा: 28/08/2067 से 28/08/2087 तक

शुक्र की दशा विवाह, सुख-सुविधा, वाहन, कलाओं और आनंद को प्रमुख बनाती है। संबंध और आर्थिक स्थिति प्रायः सुधरते हैं। यह संतुलन के साथ जीवन का आनंद लेने का समय है; अति-भोग से बचें।

शुक्र आपके भाव 5 और 12 (संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता; खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद) का स्वामी है, और यह कठिन भाव (6, 8 या 12) में है, इसलिए इसके विषयों में सावधानी और धैर्य चाहिए — भाव 12, जो खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन

SAMPLE

और नींद का भाव है। यह अपनी राशि में है, जिससे इसे आत्मविश्वास और स्थिरता मिलती है।

कुल स्वर: शुभ। यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: संतान (शुभ), यात्रा और विदेश से संबंध (शुभ), शिक्षा और विद्या (शुभ)।

सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: शनि (28/06/2080), बुध (28/08/2083)। जिन अंतर्दशाओं में अधिक सावधानी चाहिए: सूर्य (28/12/2070), मंगल (28/08/2073)।

बारहवें भाव में शुक्र को परंपरा से सुख-सुविधा, शय्या-सुख और विलास, यात्रा तथा कलाओं पर खर्च के लिए अच्छा माना जाता है। यह करुणा और आध्यात्मिक आनंद में रुचि भी देता है। शास्त्र बारहवें भाव को ऐसा भाव मानते हैं जहाँ शुक्र असामान्य रूप से अच्छा करता है। खर्च पर नियंत्रण रखें और छिपे भोग-विलास से बचें।

बारहवें भाव में पाँचवें भाव का स्वामी आध्यात्मिक रुचियाँ देता है और संतान या शिक्षा पर खर्च, या विदेश में पढ़ाई ला सकता है।

अपने ही भाव में बारहवें भाव का स्वामी आध्यात्मिक जीवन, विदेश में बसने और दान पर खर्च को सहारा देता है।

भाव 12 के विषय:

- **खर्च** — क्या हो सकता है: सुख-सुविधा, परिवार या अच्छे कार्यों पर होने वाला खर्च। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: बजट रखें, आवेग में खरीदारी से बचें और आपातकालीन कोष बनाए रखें।
- **विदेश और यात्रा** — क्या हो सकता है: विदेश-यात्रा, पढ़ाई या काम के अवसर। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कागज़ात व्यवस्थित रखें और केवल अधिकृत एजेंटों का उपयोग करें।
- **नींद और विश्राम** — क्या हो सकता है: गहरी नींद और शांत रातें। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सोने का समय तय रखें, सोने से पहले स्क्रीन से बचें और हल्का रात्रि-भोजन करें।

भाव 5 के विषय:

- **प्रेम** — क्या हो सकता है: प्रेम में गर्मजोशी और खुशी। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: ईमानदार रहें, धीरे चलें और जल्दबाज़ी में प्रतिबद्धता न करें।
- **सट्टा और निवेश** — क्या हो सकता है: सही समझ से लाभ। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सट्टे और टिप्स से बचें। निवेश केवल योग्य वित्तीय सलाहकार की सलाह से करें, और कभी उधार के पैसे से नहीं।
- **बुद्धि और भक्ति** — क्या हो सकता है: स्पष्ट सोच, अच्छी सलाह और शांति देने वाली भक्ति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: निर्णय कारण सहित लिख लें, और रोज़ थोड़ी प्रार्थना या मंत्र-साधना रखें।

शुक्र – शुक्र: 28/08/2067 से 28/12/2070 तक

महादशा स्वामी की अपनी ही यह अंतर्दशा उसके फलों को और गहरा करती है। शुक्र फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 5 और 12 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 12 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: संतान (शुभ), यात्रा और विदेश से संबंध (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 9 (भाग्य, पिता) में और शनि भाव 4 (घर, माता) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 9 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 4 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 12 के विषय:

- **आध्यात्मिक उन्नति** — क्या हो सकता है: आंतरिक शांति, ध्यान और आध्यात्मिक प्रगति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ ध्यान करें और परिवार तथा मित्रों के संपर्क में रहें।
- **अस्पताल और छिपी चिंताएँ** — क्या हो सकता है: पुरानी चिंताओं से स्वास्थ्य-लाभ और मुक्ति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: जाँच जल्दी कराएँ और डॉक्टर से सलाह लें; छोटे लक्षणों को नज़रअंदाज़ न करें।

भाव 5 के विषय:

- **संतान** — क्या हो सकता है: संतान के बारे में खुशी, प्रगति और अच्छी खबर। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: उन्हें धैर्य से समय दें, दबाव के बिना मार्गदर्शन करें और कुछ चिंताजनक लगे तो डॉक्टर या शिक्षक से जल्दी बात करें।
- **शिक्षा और पढ़ाई** — क्या हो सकता है: अच्छी एकाग्रता और पढ़ाई व परीक्षा में सफलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के

SAMPLE

लिए: तय समय-सारणी अपनाएँ, छोटे केंद्रित सत्रों में पढ़ें और फ़ोन दूर रखें।

शुक्र – सूर्य: 28/12/2070 से 28/12/2071 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। सूर्य फिर अपने भाव के विषय लाते हैं: ये भाव 3 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 1 में बैठे हैं। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: यात्रा और विदेश से संबंध (अधिकतर अनुकूल), संतान (अधिकतर अनुकूल)।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 12 (खर्च, विदेश) में और शनि भाव 5 (संतान, शिक्षा) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 12 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 5 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 1 के विषय:

- **नई शुरुआत** — क्या हो सकता है: कुछ नया शुरू करने या तरीका बदलने के लिए अच्छा समय। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: पहले योजना बनाएँ, सलाह लें और छोटे स्तर से शुरू करें ताकि बड़ा करने से पहले परख सकें।
- **आत्मविश्वास और व्यक्तित्व** — क्या हो सकता है: अधिक आत्मविश्वास, प्रभावशाली उपस्थिति और लोगों का अच्छे अर्थ में ध्यान जाना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: प्रतिक्रिया देने से पहले रुकें, पहले सुनें और बड़े निर्णय एक रात सोचकर ही लें।

भाव 3 के विषय:

- **छोटे भाई-बहन** — क्या हो सकता है: छोटे भाई-बहनों से निकटता और सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: संपर्क में रहें, हिसाब रखे बिना मदद करें और संपत्ति या पैसों के मामले आपस में स्पष्ट रखें।
- **छोटी यात्राएँ** — क्या हो सकता है: उपयोगी और सुखद छोटी यात्राएँ। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: पहले से योजना बनाएँ, कागज़ात तैयार रखें और सावधानी से वाहन चलाएँ।

शुक्र – चंद्र: 28/12/2071 से 28/08/2073 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। चंद्र फिर अपने भाव के विषय लाते हैं: ये भाव 2 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 9 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ), संतान (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत) में और शनि भाव 5 (संतान, शिक्षा) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 1 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 5 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 9 के विषय:

- **धर्म और आस्था** — क्या हो सकता है: प्रार्थना, तीर्थ या किसी आध्यात्मिक मार्गदर्शन से शांति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: एक सरल दैनिक साधना रखें और आशीर्वाद के बदले पैसे माँगने वाले से सावधान रहें।
- **लंबी यात्राएँ** — क्या हो सकता है: लाभकारी लंबी यात्रा, तीर्थ या विदेश-यात्रा। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: पहले से योजना और बुकिंग करें, बीमा और कागज़ात तैयार रखें।

भाव 2 के विषय:

- **वाणी और संवाद** — क्या हो सकता है: ऐसी बातें जिनका वज़न हो और लोग आपको सुनें। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: बोलने से पहले सोचें, बहस से बचें और महत्वपूर्ण बातें लिखित में रखें।
- **भोजन और खान-पान की आदतें** — क्या हो सकता है: अच्छे भोजन और पारिवारिक भोजन का आनंद। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: समय पर खाएँ, सादा भोजन रखें और रात में भारी भोजन से बचें।

शुक्र – मंगल: 28/08/2073 से 28/10/2074 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। मंगल फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 6 और 11 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 3 में बैठे हैं। स्वर: अधिकतर अनुकूल।

SAMPLE

सक्रिय करती है: यात्रा और विदेश से संबंध (अधिकतर अनुकूल), धन और आर्थिक स्थिति (अधिकतर अनुकूल)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) में और शनि भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 2 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 6 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। शनि भाव 6 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए वे विषय वज़न, ज़िम्मेदारी और टिकाऊ फल के साथ आते हैं।

भाव 3 के विषय:

- **लेखन, मीडिया और कौशल** — क्या हो सकता है: लेखन, बिक्री, मीडिया, फ़ोन-संपर्क और कौशल-विकास में सफलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: संदेश और कागज़ात भेजने से पहले दोबारा जाँचें और प्रतियाँ रखें।
- **पड़ोसी और आस-पास के लोग** — क्या हो सकता है: पड़ोसियों और आस-पास के लोगों से अच्छा सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: विनम्र रहें, गपशप से बचें और छोटी बातें जल्दी सुलझा लें।

भाव 6 के विषय:

- **क़ानूनी विवाद** — क्या हो सकता है: विवाद में अनुकूल परिणाम। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: समझौते को प्राथमिकता दें, सारे रिकॉर्ड रखें और योग्य वकील से सलाह लें।
- **कर्मचारी और सहायक** — क्या हो सकता है: वफ़ादार और उपयोगी सहायक या कर्मचारी। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: स्पष्ट निर्देश दें और व्यवहार निष्पक्ष तथा लिखित में रखें।

शुक्र – राहु: 28/10/2074 से 28/10/2077 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। राहु फिर अपनी राशि और राशि स्वामी के फल देते हैं, और आपकी कुंडली के भाव 5 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: संतान (शुभ), यात्रा और विदेश से संबंध (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी 6/8 संबंध में हैं, इसलिए महादशा और अंतर्दशा के विषय एक-दूसरे के विपरीत खिंच सकते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 4 (घर, माता) में और शनि भाव 7 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 4 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 7 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 5 के विषय:

- **रचनात्मकता और प्रतिभा** — क्या हो सकता है: बहते विचार और ध्यान में आने वाली प्रतिभा। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ थोड़ा तय समय अभ्यास करें और छोटे-छोटे काम पूरे करें।
- **सट्टा और निवेश** — क्या हो सकता है: सही समझ से लाभ। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सट्टे और टिप्स से बचें। निवेश केवल योग्य वित्तीय सलाहकार की सलाह से करें, और कभी उधार के पैसे से नहीं।

शुक्र – गुरु: 28/10/2077 से 28/06/2080 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। गुरु फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 7 और 10 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 6 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: संतान (शुभ), विवाह और साझेदारी (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 7 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार) में और शनि भाव 8 (अचानक परिवर्तन, शोध) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 7 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 8 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। गुरु भाव 7 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए इसके फलों को सहारा मिलता है और उनका लाभ उठाना आसान होता है।

भाव 6 के विषय:

- **प्रतिद्वंद्वी और प्रतिस्पर्धा** — क्या हो सकता है: प्रतिद्वंद्वियों और आलोचकों पर सफलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के

SAMPLE

लिए: शांत रहें, अपने काम का रिकॉर्ड रखें और गपशप से बचें।
- **कर्ज़ और ऋण** — क्या हो सकता है: कर्ज़ चुकाने और बकाया निपटाने का अवसर। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: भुगतान की योजना पहले से बनाएँ, नया कर्ज़ न लें और देरी की आशंका हो तो ऋणदाता से जल्दी बात करें।

भाव 7 के विषय:

- **जीवनसाथी और वैवाहिक जीवन** — क्या हो सकता है: जीवनसाथी से समझ, प्रेम और सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ धैर्य से बात करें, निजी बातों में बाहर के लोगों को न आने दें और हर सप्ताह साथ समय तय करें।
- **विवाह की संभावनाएँ** — क्या हो सकता है: अच्छे प्रस्ताव और विवाह की बातचीत में प्रगति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: व्यक्ति और परिवार को जानने के लिए समय लें, शांति से अनुकूलता जाँचें और जल्दबाज़ी न करें।

शुक्र – शनि: 28/06/2080 से 28/08/2083 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। शनि फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 8 और 9 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 10 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: संतान (शुभ), यात्रा और विदेश से संबंध (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) में और शनि भाव 9 (भाग्य, पिता) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 10 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 9 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। दोनों धीमे ग्रह उन भावों से मिलते हैं जिन्हें यह उप-दशा सक्रिय करती है, इसलिए यह इस चरण के अधिक घटनापूर्ण समयों में से एक है।

भाव 10 के विषय:

- **नौकरी और करियर में उन्नति** — क्या हो सकता है: उन्नति, पहचान और काम में एक कदम आगे बढ़ना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: गुणवत्ता से काम करें, कौशल बढ़ाते रहें और दूसरा प्रस्ताव हाथ में लिए बिना जल्दबाज़ी में नौकरी न छोड़ें।
- **व्यापार और पेशा** — क्या हो सकता है: व्यापार का विस्तार और बाज़ार में बेहतर नाम। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: खर्च पर नियंत्रण रखें, हिसाब साफ़ रखें और विस्तार से पहले विशेषज्ञ की सलाह लें।

भाव 8 के विषय:

- **अचानक बदलाव** — क्या हो सकता है: अप्रत्याशित सहायता और सकारात्मक मोड़। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: महत्वपूर्ण बातों के लिए एक छोटा आपातकालीन कोष और वैकल्पिक योजना रखें।
- **विरासत और साझा धन** — क्या हो सकता है: विरासत, बीमा या ससुराल पक्ष से लाभ। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: वसीयत और कागज़ात स्पष्ट रखें और किसी भी समझौते से पहले क़ानूनी सलाह लें।

शुक्र – बुध: 28/08/2083 से 28/06/2086 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। बुध फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 1 और 4 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 12 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: यात्रा और विदेश से संबंध (शुभ), शिक्षा और विद्या (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत) में और शनि भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 1 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 10 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। गुरु भाव 1 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए इसके फलों को सहारा मिलता है और उनका लाभ उठाना आसान होता है।

भाव 12 के विषय:

- **लापरवाही से हानि** — क्या हो सकता है: किसी पुराने बोझ का अंत। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कीमती वस्तुएँ सुरक्षित रखें, बिल और समझौते जाँचें और आँख मूँदकर भरोसा न करें।
- **खर्च** — क्या हो सकता है: सुख-सुविधा, परिवार या अच्छे कार्यों पर होने वाला खर्च। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: बजट रखें, आवेग में खरीदारी से बचें और आपातकालीन कोष बनाए रखें।

SAMPLE

भाव 1 के विषय:

- **छवि और प्रतिष्ठा** — क्या हो सकता है: लोगों के बीच पहचान और अच्छी छवि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: वादे निभाएँ, विनम्रता से बोलें और दिखावे से बचें।
- **स्वास्थ्य और ऊर्जा** — क्या हो सकता है: बेहतर ऊर्जा, सहनशक्ति और जल्दी स्वस्थ होना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सोने और खाने का समय तय रखें, रोज़ व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। कोई भी लक्षण हो तो इंतज़ार करने के बजाय जल्दी डॉक्टर को दिखाएँ।

शुक्र – केतु: 28/06/2086 से 28/08/2087 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। केतु फिर अपनी राशि और राशि स्वामी के फल देते हैं, और आपकी कुंडली के भाव 11 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ), संतान (शुभ)।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 3 (साहस, भाई-बहन) में और शनि भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 3 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 10 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 11 के विषय:

- **मित्र और संपर्क** — क्या हो सकता है: सहायक मित्र और उपयोगी संपर्क। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: संगति सोच-समझकर चुनें और मित्रों को पैसे उधार न दें, न ही उनकी गारंटी लें।
- **बड़े भाई-बहन** — क्या हो सकता है: बड़े भाई-बहनों से सहयोग और अच्छी सलाह। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: उनका सम्मान करें और पैसों के मामले रिश्ते से अलग रखें।

सूर्य महादशा: 28/08/2087 से 28/08/2093 तक

सूर्य की दशा अधिकार, आत्मसम्मान और मान-सम्मान से जुड़े प्रश्न सामने लाती है। सरकार, पिता और वरिष्ठों से संबंध महत्वपूर्ण हो जाते हैं। यह ज़िम्मेदारी उठाने और नेतृत्व करने का समय है; हृदय, आँखों और ऊर्जा का ध्यान रखें।

सूर्य आपके भाव 3 (साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद) का स्वामी है, और यह आपकी कुंडली में सहायक भाव (केंद्र या त्रिकोण) में है, जो सामान्यतः अच्छे फल देता है — भाव 1, जो स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत का भाव है। यह सम राशि में है।

कुल स्वर: परीक्षा वाला। यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (परीक्षा वाला), करियर और व्यवसाय (परीक्षा वाला), यात्रा और विदेश से संबंध (परीक्षा वाला)।

सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: बुध (16/06/2091), शनि (04/07/2090)। जिन अंतर्दशाओं में अधिक सावधानी चाहिए: सूर्य (28/08/2087), मंगल (16/06/2088)।

पहले भाव में सूर्य होने से आपमें आत्म-बोध प्रबल होता है, व्यवहार में गरिमा होती है और नेतृत्व करने की इच्छा होती है। लोग आपको नोटिस करते हैं, और आप अपने पैरों पर खड़ा होना पसंद करते हैं। आत्मविश्वास और सम्मान की भावना आपकी शक्ति हैं; अभिमान, तेज़ गुस्सा और आलोचना के प्रति अधीरता वे कमज़ोरियाँ हैं जिन्हें संभालना है। शास्त्र इस स्थिति को अच्छी जीवन-शक्ति के साथ-साथ गरमी से जुड़ी परेशानियों, आँखों पर ज़ोर और कभी-कभी सिरदर्द से भी जोड़ते हैं। ज़िम्मेदारी के पदों पर आप अच्छा करते हैं, और ईमानदारी से काम करने पर सरकार या वरिष्ठों का सहयोग मिलने की संभावना है।

लग्न में तीसरे भाव का स्वामी साहस, आत्मविश्वास और संवाद की प्रतिभा देता है। आप उद्यमी हैं और पहल करने को तैयार रहते हैं।

भाव 1 के विषय:

- **नई शुरुआत** — क्या हो सकता है: जल्दबाज़ी में या बिना योजना की शुरुआत। क्या सहायक है: पहले योजना बनाएँ, सलाह लें और छोटे स्तर से शुरु करें ताकि बड़ा करने से पहले परख सकें।
- **आत्मविश्वास और व्यक्तित्व** — क्या हो सकता है: अधीरता, अहंकार का टकराव या स्वयं पर संदेह। क्या सहायक है: प्रतिक्रिया देने से पहले रुकें, पहले सुनें और बड़े निर्णय एक रात सोचकर ही लें।

SAMPLE

- **छवि और प्रतिष्ठा** — क्या हो सकता है: छोटी बातों पर गलत समझा जाना या आलोचना। क्या सहायक है: वादे निभाएँ, विनम्रता से बोलें और दिखावे से बचें।

भाव 3 के विषय:

- **छोटे भाई-बहन** — क्या हो सकता है: ग़लतफ़हमी या किसी छोटे भाई-बहन की चिंता। क्या सहायक है: संपर्क में रहें, हिसाब रखे बिना मदद करें और संपत्ति या पैसों के मामले आपस में स्पष्ट रखें।
- **छोटी यात्राएँ** — क्या हो सकता है: यात्रा में देरी या छोटी-मोटी असुविधाएँ। क्या सहायक है: पहले से योजना बनाएँ, कागज़ात तैयार रखें और सावधानी से वाहन चलाएँ।
- **लेखन, मीडिया और कौशल** — क्या हो सकता है: संवाद में गड़बड़ी या कागज़ खो जाना। क्या सहायक है: संदेश और कागज़ात भेजने से पहले दोबारा जाँचें और प्रतियाँ रखें।

सूर्य – सूर्य: 28/08/2087 से 16/12/2087 तक

महादशा स्वामी की अपनी ही यह अंतर्दशा उसके फलों को और गहरा करती है। सूर्य फिर अपने भाव के विषय लाते हैं: ये भाव 3 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 1 में बैठे हैं। स्वर: परीक्षा वाला। सक्रिय करती है: स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (परीक्षा वाला), करियर और व्यवसाय (परीक्षा वाला)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 4 (घर, माता) में और शनि भाव 11 (आय, लाभ) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 4 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 11 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 1 के विषय:

- **नई शुरुआत** — क्या हो सकता है: जल्दबाज़ी में या बिना योजना की शुरुआत। क्या सहायक है: पहले योजना बनाएँ, सलाह लें और छोटे स्तर से शुरु करें ताकि बड़ा करने से पहले परख सकें।
- **स्वास्थ्य और ऊर्जा** — क्या हो सकता है: थकान, कमज़ोर प्रतिरोधक क्षमता या छोटी-मोटी स्वास्थ्य शिकायतें। क्या सहायक है: सोने और खाने का समय तय रखें, रोज़ व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। कोई भी लक्षण हो तो इंतज़ार करने के बजाय जल्दी डॉक्टर को दिखाएँ।

भाव 3 के विषय:

- **साहस और प्रयास** — क्या हो सकता है: बिखरे प्रयास या हिचकिचाहट। क्या सहायक है: छोटे दैनिक लक्ष्य रखें और अगला काम शुरू करने से पहले एक काम पूरा करें।
- **छोटे भाई-बहन** — क्या हो सकता है: ग़लतफ़हमी या किसी छोटे भाई-बहन की चिंता। क्या सहायक है: संपर्क में रहें, हिसाब रखे बिना मदद करें और संपत्ति या पैसों के मामले आपस में स्पष्ट रखें।

सूर्य – चंद्र: 16/12/2087 से 16/06/2088 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। चंद्र फिर अपने भाव के विषय लाते हैं: ये भाव 2 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 9 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (मिश्रित), करियर और व्यवसाय (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 4 (घर, माता) में और शनि भाव 11 (आय, लाभ) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 4 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 11 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 9 के विषय:

- **उच्च शिक्षा** — क्या हो सकता है: उच्च शिक्षा, शोध या पाठ्यक्रमों में प्रवेश या सफलता; कठिन पक्ष में, उच्च शिक्षा की योजनाओं में बाधा या बदलाव। क्या सहायक है: जल्दी आवेदन करें और वैकल्पिक विकल्प तैयार रखें।
- **दान और पुण्य कर्म** — क्या हो सकता है: सार्थक दान का अवसर जो आशीर्वाद दिलाए; कठिन पक्ष में, ऐसा दान जो ग़लत जगह जाए या जिसकी कद्र न हो। क्या सहायक है: चुपचाप सच्चे कार्यों के लिए दें और कभी अपनी सामर्थ्य से अधिक न दें।

SAMPLE

भाव 2 के विषय:

- **पारिवारिक संपत्ति और कीमती वस्तुएँ** — क्या हो सकता है: पारिवारिक संपत्ति, सोने या कीमती वस्तुओं में वृद्धि; कठिन पक्ष में, पारिवारिक संपत्ति को लेकर चिंता या पारिवारिक बँटवारे में देरी। क्या सहायक है: कीमती चीज़ें सुरक्षित रखें, कागज़ात व्यवस्थित रखें और पारिवारिक संपत्ति पर शांति से खुलकर बात करें।
- **बचत और हाथ में धन** — क्या हो सकता है: धन का नियमित आना और बेहतर बचत; कठिन पक्ष में, धन का हाथ से निकल जाना या बचत में देरी। क्या सहायक है: मासिक बजट रखें, पहले बचत करें फिर खर्च करें। निवेश या उधार देने से पहले योग्य वित्तीय सलाहकार से सलाह लें।

सूर्य – मंगल: 16/06/2088 से 21/10/2088 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। मंगल फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 6 और 11 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 3 में बैठे हैं। स्वर: परीक्षा वाला। सक्रिय करती है: स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (परीक्षा वाला), करियर और व्यवसाय (परीक्षा वाला)।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 4 (घर, माता) में और शनि भाव 12 (खर्च, विदेश) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 4 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 12 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 3 के विषय:

- **पड़ोसी और आस-पास के लोग** — क्या हो सकता है: पड़ोसियों या सहकर्मियों से छोटे झगड़े। क्या सहायक है: विनम्र रहें, गपशप से बचें और छोटी बातें जल्दी सुलझा लें।
- **साहस और प्रयास** — क्या हो सकता है: बिखरे प्रयास या हिचकिचाहट। क्या सहायक है: छोटे दैनिक लक्ष्य रखें और अगला काम शुरू करने से पहले एक काम पूरा करें।

भाव 6 के विषय:

- **स्वास्थ्य और दैनिक दिनचर्या** — क्या हो सकता है: पाचन, तनाव से जुड़ी या बार-बार होने वाली छोटी शिकायतें। क्या सहायक है: हल्का खाएँ, व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। डॉक्टर को जल्दी दिखाएँ; केवल उपायों पर निर्भर न रहें।
- **सेवा और दैनिक कार्य** — क्या हो सकता है: काम का अधिक बोझ और थकान। क्या सहायक है: काम की प्राथमिकता तय करें, जहाँ हो सके सौंपें और ठीक से विश्राम लें।

सूर्य – राहु: 21/10/2088 से 15/09/2089 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। राहु फिर अपनी राशि और राशि स्वामी के फल देते हैं, और आपकी कुंडली के भाव 5 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: यात्रा और विदेश से संबंध (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 5 (संतान, शिक्षा) में और शनि भाव 11 (आय, लाभ) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 5 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 11 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। गुरु भाव 5 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए इसके फलों को सहारा मिलता है और उनका लाभ उठाना आसान होता है।

भाव 5 के विषय:

- **बुद्धि और भक्ति** — क्या हो सकता है: स्पष्ट सोच, अच्छी सलाह और शांति देने वाली भक्ति; कठिन पक्ष में, भ्रम या ज़्यादा सोचना। क्या सहायक है: निर्णय कारण सहित लिख लें, और रोज़ थोड़ी प्रार्थना या मंत्र-साधना रखें।
- **संतान** — क्या हो सकता है: संतान के बारे में खुशी, प्रगति और अच्छी खबर; कठिन पक्ष में, संतान की पढ़ाई, स्वास्थ्य या व्यवहार की चिंता। क्या सहायक है: उन्हें धैर्य से समय दें, दबाव के बिना मार्गदर्शन करें और कुछ चिंताजनक लगे तो डॉक्टर या शिक्षक से जल्दी बात करें।

SAMPLE

सूर्य – गुरु: 15/09/2089 से 04/07/2090 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। गुरु फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 7 और 10 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 6 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (मिश्रित), स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी 6/8 संबंध में हैं, इसलिए महादशा और अंतर्दशा के विषय एक-दूसरे के विपरीत खिंच सकते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में और शनि भाव 12 (खर्च, विदेश) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 6 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 12 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। गुरु भाव 6 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए इसके फलों को सहारा मिलता है और उनका लाभ उठाना आसान होता है।

भाव 6 के विषय:

- **क़ानूनी विवाद** — क्या हो सकता है: विवाद में अनुकूल परिणाम; कठिन पक्ष में, विवाद का लंबा खिंचना। क्या सहायक है: समझौते को प्राथमिकता दें, सारे रिकॉर्ड रखें और योग्य वकील से सलाह लें।
- **कर्मचारी और सहायक** — क्या हो सकता है: वफ़ादार और उपयोगी सहायक या कर्मचारी; कठिन पक्ष में, कर्मचारियों या सहायकों से परेशानी। क्या सहायक है: स्पष्ट निर्देश दें और व्यवहार निष्पक्ष तथा लिखित में रखें।

भाव 7 के विषय:

- **व्यापारिक साझेदारी** — क्या हो सकता है: लाभदायक गठबंधन और भरोसेमंद साझेदार; कठिन पक्ष में, साझेदार से मतभेद या अस्पष्ट शर्तें। क्या सहायक है: हर शर्त लिखित में रखें और हस्ताक्षर से पहले क़ानूनी सलाह लें।
- **ग्राहक और जनता से व्यवहार** — क्या हो सकता है: ग्राहकों, क्लाइंट और जनता से अच्छा प्रतिसाद; कठिन पक्ष में, कठिन ग्राहक या सार्वजनिक आलोचना। क्या सहायक है: विनम्र रहें, वचन निभाएँ और समझौतों का उचित रिकॉर्ड रखें।

सूर्य – शनि: 04/07/2090 से 16/06/2091 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। शनि फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 8 और 9 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 10 में बैठे हैं। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (अधिकतर अनुकूल), करियर और व्यवसाय (अधिकतर अनुकूल)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 7 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार) में और शनि भाव 12 (खर्च, विदेश) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 7 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 12 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 10 के विषय:

- **अधिकारी और अधिकारधारी लोग** — क्या हो सकता है: अधिकारियों और अधिकारधारी लोगों का सहयोग; कठिन पक्ष में, किसी वरिष्ठ या अधिकारी से टकराव। क्या सहायक है: स्पष्ट संवाद करें, समय पर काम पूरा करें और सार्वजनिक बहस से बचें।
- **प्रतिष्ठा और सार्वजनिक छवि** — क्या हो सकता है: प्रतिष्ठा और सम्मान में वृद्धि; कठिन पक्ष में, किसी छोटी बात पर आलोचना या मान-हानि। क्या सहायक है: आचरण निर्दोष रखें और ऑनलाइन कुछ भी डालने से पहले दो बार सोचें।

भाव 8 के विषय:

- **शोध और गूढ़ विषय** — क्या हो सकता है: गहरा शोध, अंतर्दृष्टि और गूढ़ विषयों के अध्ययन में सफलता; कठिन पक्ष में, भ्रम या अत्यधिक चिंता। क्या सहायक है: नियमित दिनचर्या रखें और अति या जोखिम भरी साधनाओं से बचें।
- **स्वास्थ्य और सुरक्षा** — क्या हो सकता है: बीमारी के दौर के बाद स्वास्थ्य-लाभ; कठिन पक्ष में, पुराने या छिपे स्वास्थ्य मामलों और दुर्घटनाओं में सावधानी की आवश्यकता। क्या सहायक है: नियमित जाँच कराएँ, जोखिम भरी गतिविधियों से बचें और सावधानी से वाहन चलाएँ व यात्रा करें। डॉक्टर को जल्दी दिखाएँ।

SAMPLE

सूर्य – बुध: 16/06/2091 से 22/04/2092 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। बुध फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 1 और 4 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 12 में बैठे हैं। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (अधिकतर अनुकूल), यात्रा और विदेश से संबंध (अधिकतर अनुकूल)।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 7 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार) में और शनि भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 7 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 1 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। शनि भाव 1 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए वे विषय वज़न, ज़िम्मेदारी और टिकाऊ फल के साथ आते हैं।

भाव 12 के विषय:

- **विदेश और यात्रा** — क्या हो सकता है: विदेश-यात्रा, पढ़ाई या काम के अवसर। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कागज़ात व्यवस्थित रखें और केवल अधिकृत एजेंटों का उपयोग करें।
- **नींद और विश्राम** — क्या हो सकता है: गहरी नींद और शांत रातें। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सोने का समय तय रखें, सोने से पहले स्क्रीन से बचें और हल्का रात्रि-भोजन करें।

भाव 1 के विषय:

- **छवि और प्रतिष्ठा** — क्या हो सकता है: लोगों के बीच पहचान और अच्छी छवि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: वादे निभाएँ, विनम्रता से बोलें और दिखावे से बचें।
- **स्वास्थ्य और ऊर्जा** — क्या हो सकता है: बेहतर ऊर्जा, सहनशक्ति और जल्दी स्वस्थ होना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सोने और खाने का समय तय रखें, रोज़ व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। कोई भी लक्षण हो तो इंतज़ार करने के बजाय जल्दी डॉक्टर को दिखाएँ।

सूर्य – केतु: 22/04/2092 से 28/08/2092 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। केतु फिर अपनी राशि और राशि स्वामी के फल देते हैं, और आपकी कुंडली के भाव 11 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 9 (भाग्य, पिता) में और शनि भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 9 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 1 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 11 के विषय:

- **इच्छाओं की पूर्ति** — क्या हो सकता है: लंबे समय से अटकी इच्छाएँ पूरी होने लगती हैं; कठिन पक्ष में, ऐसी इच्छाएँ जिनके लिए और धैर्य चाहिए। क्या सहायक है: यथार्थवादी लक्ष्य रखें और चरणबद्ध तरीके से आगे बढ़ें।
- **समूह और संगठन** — क्या हो सकता है: समूहों, संगठनों और समुदायों से सहयोग; कठिन पक्ष में, किसी समूह के झगड़ों में खिंच जाना। क्या सहायक है: समूहों के झगड़ों से दूर रहें और अपना समय वहीं दें जहाँ उसकी कद्र हो।

सूर्य – शुक्र: 28/08/2092 से 28/08/2093 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। शुक्र फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 5 और 12 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 12 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: यात्रा और विदेश से संबंध (मिश्रित)।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 9 (भाग्य, पिता) में और शनि भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 9 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 1 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 12 के विषय:

SAMPLE

- **आध्यात्मिक उन्नति** — क्या हो सकता है: आंतरिक शांति, ध्यान और आध्यात्मिक प्रगति; कठिन पक्ष में, अकेलेपन की भावना या अंतर्मुखी हो जाना। क्या सहायक है: रोज़ ध्यान करें और परिवार तथा मित्रों के संपर्क में रहें।
- **अस्पताल और छिपी चिंताएँ** — क्या हो सकता है: पुरानी चिंताओं से स्वास्थ्य-लाभ और मुक्ति; कठिन पक्ष में, अस्पताल जाना पड़ना या छिपी चिंताएँ। क्या सहायक है: जाँच जल्दी कराएँ और डॉक्टर से सलाह लें; छोटे लक्षणों को नज़रअंदाज़ न करें।

भाव 5 के विषय:

- **प्रेम** — क्या हो सकता है: प्रेम में गर्मजोशी और खुशी; कठिन पक्ष में, ग़लतफ़हमियाँ या प्रेम में अनुचित निर्णय। क्या सहायक है: ईमानदार रहें, धीरे चलें और जल्दबाज़ी में प्रतिबद्धता न करें।
- **शिक्षा और पढ़ाई** — क्या हो सकता है: अच्छी एकाग्रता और पढ़ाई व परीक्षा में सफलता; कठिन पक्ष में, ध्यान भटकना या मेहनत से कम परिणाम। क्या सहायक है: तय समय-सारणी अपनाएँ, छोटे केंद्रित सत्रों में पढ़ें और फ़ोन दूर रखें।

चंद्र महादशा: 28/08/2093 से 29/08/2103 तक

चंद्रमा की दशा मन, भावनाओं, परिवार और सार्वजनिक जीवन को प्रमुख बनाती है। यात्रा, निवास-परिवर्तन और नए संपर्क आम हैं। यह संबंधों को सँवारने और मन की शांति, नींद तथा शरीर में जल-संतुलन की रक्षा करने का समय है।

चंद्र आपके भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) का स्वामी है, और यह आपकी कुंडली में सहायक भाव (केंद्र या त्रिकोण) में है, जो सामान्यतः अच्छे फल देता है — भाव 9, जो भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ का भाव है। यह सम राशि में है।

कुल स्वर: अधिकतर अनुकूल। यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: धन और आर्थिक स्थिति (अधिकतर अनुकूल), आध्यात्मिक जीवन (अधिकतर अनुकूल), विवाह और साझेदारी (अधिकतर अनुकूल)।

सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: शनि (27/11/2097), बुध (29/06/2099)। जिन अंतर्दशाओं में अधिक सावधानी चाहिए: मंगल (28/06/2094), गुरु (28/07/2096)।

नौवें भाव में चंद्रमा धार्मिक, दयालु और भाग्यशाली स्वभाव देता है। आपको यात्रा, तीर्थ और सीखना अच्छा लगता है, और प्रायः माता या मातृतुल्य व्यक्तियों का सहारा मिलता है। शास्त्र इसे भाग्य और प्रतिष्ठा के लिए अच्छी स्थिति मानते हैं। जीवन के साथ आपकी मान्यताएँ विकसित हो सकती हैं। दान और गुरुजनों का आदर आपके भाग्य को बल देते हैं।

नौवें भाव में दूसरे भाव का स्वामी धन के लिए भाग्यशाली है। धन भाग्य, पिता, गुरुजनों या धार्मिक और शैक्षिक कार्यों से आता है।

भाव 9 के विषय:

- **भाग्य और सौभाग्य** — क्या हो सकता है: भाग्य साथ देता है और प्रयासों का फल मिलता है। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: लगातार काम करते रहें, केवल भाग्य पर निर्भर न रहें और कृतज्ञता के साथ दान करें।
- **पिता** — क्या हो सकता है: पिता या पिता समान व्यक्तियों से अच्छी खबर, सहयोग या आशीर्वाद। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: उनसे अक्सर बात करें, पुरानी बहसों से बचें और उनकी नियमित स्वास्थ्य जाँच न छूटे यह देखें।
- **गुरु और मार्गदर्शक** — क्या हो सकता है: किसी अच्छे गुरु या मार्गदर्शक से मार्गदर्शन। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: गुरुजनों का सम्मान करें, बड़े निर्णयों से पहले उनकी सलाह लें और विनम्रता से सीखें।

भाव 2 के विषय:

- **पारिवारिक जीवन** — क्या हो सकता है: घर में तालमेल, एकजुटता और सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: संभव हो तो साथ भोजन करें, ताने देने से बचें और रिश्तेदारों के बीच पैसों के मामले लिखित में तय करें।
- **वाणी और संवाद** — क्या हो सकता है: ऐसी बातें जिनका वज़न हो और लोग आपको सुनें। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: बोलने से पहले सोचें, बहस से बचें और महत्वपूर्ण बातें लिखित में रखें।
- **भोजन और खान-पान की आदतें** — क्या हो सकता है: अच्छे भोजन और पारिवारिक भोजन का आनंद। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: समय पर खाएँ, सादा भोजन रखें और रात में भारी भोजन से बचें।

SAMPLE

चंद्र – चंद्र: 28/08/2093 से 28/06/2094 तक

महादशा स्वामी की अपनी ही यह अंतर्दशा उसके फलों को और गहरा करती है। चंद्र फिर अपने भाव के विषय लाते हैं: ये भाव 2 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 9 में बैठे हैं। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: धन और आर्थिक स्थिति (अधिकतर अनुकूल), आध्यात्मिक जीवन (अधिकतर अनुकूल)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) में और शनि भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 10 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 2 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। शनि भाव 2 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए वे विषय वज़न, ज़िम्मेदारी और टिकाऊ फल के साथ आते हैं।

भाव 9 के विषय:

- **धर्म और आस्था** — क्या हो सकता है: प्रार्थना, तीर्थ या किसी आध्यात्मिक मार्गदर्शन से शांति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: एक सरल दैनिक साधना रखें और आशीर्वाद के बदले पैसे माँगने वाले से सावधान रहें।
- **लंबी यात्राएँ** — क्या हो सकता है: लाभकारी लंबी यात्रा, तीर्थ या विदेश-यात्रा। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: पहले से योजना और बुकिंग करें, बीमा और कागज़ात तैयार रखें।

भाव 2 के विषय:

- **पारिवारिक संपत्ति और कीमती वस्तुएँ** — क्या हो सकता है: पारिवारिक संपत्ति, सोने या कीमती वस्तुओं में वृद्धि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कीमती चीज़ें सुरक्षित रखें, कागज़ात व्यवस्थित रखें और पारिवारिक संपत्ति पर शांति से खुलकर बात करें।
- **बचत और हाथ में धन** — क्या हो सकता है: धन का नियमित आना और बेहतर बचत। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: मासिक बजट रखें, पहले बचत करें फिर खर्च करें। निवेश या उधार देने से पहले योग्य वित्तीय सलाहकार से सलाह लें।

चंद्र – मंगल: 28/06/2094 से 27/01/2095 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। मंगल फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 6 और 11 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 3 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: धन और आर्थिक स्थिति (मिश्रित), करियर और व्यवसाय (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 11 (आय, लाभ) में और शनि भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 11 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 2 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। गुरु भाव 11 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए इसके फलों को सहारा मिलता है और उनका लाभ उठाना आसान होता है।

भाव 3 के विषय:

- **छोटी यात्राएँ** — क्या हो सकता है: उपयोगी और सुखद छोटी यात्राएँ; कठिन पक्ष में, यात्रा में देरी या छोटी-मोटी असुविधाएँ। क्या सहायक है: पहले से योजना बनाएँ, कागज़ात तैयार रखें और सावधानी से वाहन चलाएँ।
- **लेखन, मीडिया और कौशल** — क्या हो सकता है: लेखन, बिक्री, मीडिया, फ़ोन-संपर्क और कौशल-विकास में सफलता; कठिन पक्ष में, संवाद में गड़बड़ी या कागज़ खो जाना। क्या सहायक है: संदेश और कागज़ात भेजने से पहले दोबारा जाँचें और प्रतियाँ रखें।

भाव 6 के विषय:

- **प्रतिद्वंद्वी और प्रतिस्पर्धा** — क्या हो सकता है: प्रतिद्वंद्वियों और आलोचकों पर सफलता; कठिन पक्ष में, कड़ा विरोध या दफ़्तर की राजनीति। क्या सहायक है: शांत रहें, अपने काम का रिकॉर्ड रखें और गपशप से बचें।
- **कर्ज़ और ऋण** — क्या हो सकता है: कर्ज़ चुकाने और बकाया निपटाने का अवसर; कठिन पक्ष में, कर्ज़ या किस्तों का दबाव। क्या सहायक है: भुगतान की योजना पहले से बनाएँ, नया कर्ज़ न लें और देरी की आशंका हो तो ऋणदाता से जल्दी बात करें।

SAMPLE

चंद्र – राहु: 27/01/2095 से 28/07/2096 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। राहु फिर अपनी राशि और राशि स्वामी के फल देते हैं, और आपकी कुंडली के भाव 5 में बैठे हैं। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: संतान (अधिकतर अनुकूल), आध्यात्मिक जीवन (अधिकतर अनुकूल)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 12 (खर्च, विदेश) में और शनि भाव 3 (साहस, भाई-बहन) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 12 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 3 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 5 के विषय:

- **रचनात्मकता और प्रतिभा** — क्या हो सकता है: बहते विचार और ध्यान में आने वाली प्रतिभा। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ थोड़ा तय समय अभ्यास करें और छोटे-छोटे काम पूरे करें।
- **सट्टा और निवेश** — क्या हो सकता है: सही समझ से लाभ। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सट्टे और टिप्स से बचें। निवेश केवल योग्य वित्तीय सलाहकार की सलाह से करें, और कभी उधार के पैसे से नहीं।

चंद्र – गुरु: 28/07/2096 से 27/11/2097 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। गुरु फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 7 और 10 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 6 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: विवाह और साझेदारी (मिश्रित), धन और आर्थिक स्थिति (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत) में और शनि भाव 3 (साहस, भाई-बहन) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 1 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 3 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 6 के विषय:

- **स्वास्थ्य और दैनिक दिनचर्या** — क्या हो सकता है: अच्छी रिकवरी और दिनचर्या में अनुशासन; कठिन पक्ष में, पाचन, तनाव से जुड़ी या बार-बार होने वाली छोटी शिकायतें। क्या सहायक है: हल्का खाएँ, व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। डॉक्टर को जल्दी दिखाएँ; केवल उपायों पर निर्भर न रहें।
- **सेवा और दैनिक कार्य** — क्या हो सकता है: मेहनत और सेवा की सराहना; कठिन पक्ष में, काम का अधिक बोझ और थकान। क्या सहायक है: काम की प्राथमिकता तय करें, जहाँ हो सके सौंपें और ठीक से विश्राम लें।

भाव 7 के विषय:

- **समझौते और अनुबंध** — क्या हो सकता है: अनुकूल समझौते और सहज बातचीत; कठिन पक्ष में, शर्तों पर देरी या असहमति। क्या सहायक है: हर धारा पढ़ें, हस्ताक्षर से पहले प्रश्न पूछें और प्रतियाँ रखें।
- **जीवनसाथी और वैवाहिक जीवन** — क्या हो सकता है: जीवनसाथी से समझ, प्रेम और सहयोग; कठिन पक्ष में, जीवनसाथी से मतभेद, दूरी या अहंकार का टकराव। क्या सहायक है: रोज़ धैर्य से बात करें, निजी बातों में बाहर के लोगों को न आने दें और हर सप्ताह साथ समय तय करें।

चंद्र – शनि: 27/11/2097 से 29/06/2099 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। शनि फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 8 और 9 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 10 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ), धन और आर्थिक स्थिति (शुभ)।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 3 (साहस, भाई-बहन) में और शनि भाव 4 (घर, माता) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 3 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 4 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

SAMPLE

भाव 10 के विषय:

- **सरकारी और आधिकारिक मामले** — क्या हो सकता है: सरकारी या आधिकारिक मामलों में अनुकूलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कागज़ात पूरे रखें और नियमों का सख्ती से पालन करें।
- **नौकरी और करियर में उन्नति** — क्या हो सकता है: उन्नति, पहचान और काम में एक कदम आगे बढ़ना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: गुणवत्ता से काम करें, कौशल बढ़ाते रहें और दूसरा प्रस्ताव हाथ में लिए बिना जल्दबाज़ी में नौकरी न छोड़ें।

भाव 8 के विषय:

- **जीवनसाथी की आर्थिक स्थिति** — क्या हो सकता है: जीवनसाथी के साधनों से सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: पैसों पर खुलकर बात करें और साझा खाते व ज़िम्मेदारियाँ स्पष्ट रखें।
- **अचानक बदलाव** — क्या हो सकता है: अप्रत्याशित सहायता और सकारात्मक मोड़। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: महत्वपूर्ण बातों के लिए एक छोटा आपातकालीन कोष और वैकल्पिक योजना रखें।

चंद्र – बुध: 29/06/2099 से 28/11/2100 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। बुध फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 1 और 4 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 12 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (शुभ), घर, संपत्ति और वाहन (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 4 (घर, माता) में और शनि भाव 5 (संतान, शिक्षा) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 4 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 5 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। गुरु भाव 4 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए इसके फलों को सहारा मिलता है और उनका लाभ उठाना आसान होता है।

भाव 12 के विषय:

- **लापरवाही से हानि** — क्या हो सकता है: किसी पुराने बोझ का अंत। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कीमती वस्तुएँ सुरक्षित रखें, बिल और समझौते जाँचें और आँख मूँदकर भरोसा न करें।
- **खर्च** — क्या हो सकता है: सुख-सुविधा, परिवार या अच्छे कार्यों पर होने वाला खर्च। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: बजट रखें, आवेग में खरीदारी से बचें और आपातकालीन कोष बनाए रखें।

भाव 1 के विषय:

- **आत्मविश्वास और व्यक्तित्व** — क्या हो सकता है: अधिक आत्मविश्वास, प्रभावशाली उपस्थिति और लोगों का अच्छे अर्थ में ध्यान जाना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: प्रतिक्रिया देने से पहले रुकें, पहले सुनें और बड़े निर्णय एक रात सोचकर ही लें।
- **नई शुरुआत** — क्या हो सकता है: कुछ नया शुरू करने या तरीका बदलने के लिए अच्छा समय। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: पहले योजना बनाएँ, सलाह लें और छोटे स्तर से शुरू करें ताकि बड़ा करने से पहले परख सकें।

चंद्र – केतु: 28/11/2100 से 29/06/2101 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। केतु फिर अपनी राशि और राशि स्वामी के फल देते हैं, और आपकी कुंडली के भाव 11 में बैठे हैं। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: धन और आर्थिक स्थिति (अधिकतर अनुकूल), आध्यात्मिक जीवन (अधिकतर अनुकूल)।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 5 (संतान, शिक्षा) में और शनि भाव 5 (संतान, शिक्षा) में गोचर करते हैं। दोनों धीमे ग्रह भाव 5 पर साथ काम करते हैं, इसलिए इन विषयों पर बहुत ध्यान रहता है और फल तीव्रता से महसूस होते हैं।

भाव 11 के विषय:

- **आय और लाभ** — क्या हो सकता है: आय, बोनस या धन के नए स्रोतों में वृद्धि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: अपेक्षित आय पर पहले से खर्च न करें और बकाया का साफ़ रिकॉर्ड रखें।
- **मित्र और संपर्क** — क्या हो सकता है: सहायक मित्र और उपयोगी संपर्क। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: संगति सोच-समझकर चुनें और मित्रों को पैसे उधार न दें, न ही उनकी गारंटी लें।

SAMPLE

चंद्र – शुक्र: 29/06/2101 से 28/02/2103 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। शुक्र फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 5 और 12 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 12 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ), धन और आर्थिक स्थिति (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में और शनि भाव 5 (संतान, शिक्षा) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 6 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 5 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। शनि भाव 5 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए वे विषय वज़न, ज़िम्मेदारी और टिकाऊ फल के साथ आते हैं।

भाव 12 के विषय:

- **विदेश और यात्रा** — क्या हो सकता है: विदेश-यात्रा, पढ़ाई या काम के अवसर। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कागज़ात व्यवस्थित रखें और केवल अधिकृत एजेंटों का उपयोग करें।
- **नींद और विश्राम** — क्या हो सकता है: गहरी नींद और शांत रातें। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सोने का समय तय रखें, सोने से पहले स्क्रीन से बचें और हल्का रात्रि-भोजन करें।

भाव 5 के विषय:

- **प्रेम** — क्या हो सकता है: प्रेम में गर्मजोशी और खुशी। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: ईमानदार रहें, धीरे चलें और जल्दबाज़ी में प्रतिबद्धता न करें।
- **बुद्धि और भक्ति** — क्या हो सकता है: स्पष्ट सोच, अच्छी सलाह और शांति देने वाली भक्ति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: निर्णय कारण सहित लिख लें, और रोज़ थोड़ी प्रार्थना या मंत्र-साधना रखें।

चंद्र – सूर्य: 28/02/2103 से 29/08/2103 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। सूर्य फिर अपने भाव के विषय लाते हैं: ये भाव 3 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 1 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (मिश्रित), धन और आर्थिक स्थिति (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 8 (अचानक परिवर्तन, शोध) में और शनि भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 8 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 6 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 1 के विषय:

- **आत्मविश्वास और व्यक्तित्व** — क्या हो सकता है: अधिक आत्मविश्वास, प्रभावशाली उपस्थिति और लोगों का अच्छे अर्थ में ध्यान जाना; कठिन पक्ष में, अधीरता, अहंकार का टकराव या स्वयं पर संदेह। क्या सहायक है: प्रतिक्रिया देने से पहले रुकें, पहले सुनें और बड़े निर्णय एक रात सोचकर ही लें।
- **नई शुरुआत** — क्या हो सकता है: कुछ नया शुरू करने या तरीका बदलने के लिए अच्छा समय; कठिन पक्ष में, जल्दबाज़ी में या बिना योजना की शुरुआत। क्या सहायक है: पहले योजना बनाएँ, सलाह लें और छोटे स्तर से शुरू करें ताकि बड़ा करने से पहले परख सकें।

भाव 3 के विषय:

- **छोटे भाई-बहन** — क्या हो सकता है: छोटे भाई-बहनों से निकटता और सहयोग; कठिन पक्ष में, ग़लतफ़हमी या किसी छोटे भाई-बहन की चिंता। क्या सहायक है: संपर्क में रहें, हिसाब रखे बिना मदद करें और संपत्ति या पैसों के मामले आपस में स्पष्ट रखें।
- **छोटी यात्राएँ** — क्या हो सकता है: उपयोगी और सुखद छोटी यात्राएँ; कठिन पक्ष में, यात्रा में देरी या छोटी-मोटी असुविधाएँ। क्या सहायक है: पहले से योजना बनाएँ, कागज़ात तैयार रखें और सावधानी से वाहन चलाएँ।

SAMPLE

मंगल महादशा: 29/08/2103 से 29/08/2110 तक

मंगल की दशा ऊर्जा, प्रतिस्पर्धा और सक्रियता लाती है। संपत्ति, भूमि, तकनीकी काम और साहसी निर्णय केंद्र में रहते हैं। यह मेहनत करके निर्माण करने का समय है; जल्दबाज़ी, झगड़ों और दुर्घटनाओं से बचें।

मंगल आपके भाव 6 और 11 (प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग, सेवा और शत्रु; आय, लाभ, मित्र और इच्छापूर्ति) का स्वामी है, और यह उपचय भाव (3, 6, 10 या 11) में है, जिसके फल समय के साथ प्रयास से बढ़ते हैं — भाव 3, जो साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद का भाव है। यह मित्र राशि में है, जो इसके फलों को सहारा देती है।

कुल स्वर: परीक्षा वाला। यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (परीक्षा वाला), धन और आर्थिक स्थिति (परीक्षा वाला), स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (परीक्षा वाला)।

सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: शनि (19/01/2106), बुध (28/02/2107)। जिन अंतर्दशाओं में अधिक सावधानी चाहिए: सूर्य (22/09/2109), मंगल (29/08/2103)।

तीसरे भाव में मंगल उसकी सबसे अच्छी स्थितियों में से एक है। यह असाधारण साहस, पहल और प्रतिस्पर्धियों पर विजय की क्षमता देता है। खेल, सेना, तकनीकी काम, बिक्री या निडर प्रयास माँगने वाले किसी भी क्षेत्र में आप अच्छा कर सकते हैं। शास्त्र पराक्रम और अपने प्रयास से सफलता के लिए इस स्थिति की प्रशंसा करते हैं। भाई-बहनों से संबंध प्रतिस्पर्धी पर रक्षा करने वाले हो सकते हैं।

तीसरे भाव में छठे भाव का स्वामी विरोधियों को हराने का साहस देता है। विजय के लिए यह सामान्यतः अच्छी स्थिति है।

तीसरे भाव में ग्यारहवें भाव का स्वामी प्रयास, भाई-बहनों, संवाद और यात्रा से लाभ देता है।

भाव 3 के विषय:

- **पड़ोसी और आस-पास के लोग** — क्या हो सकता है: पड़ोसियों या सहकर्मियों से छोटे झगड़े। क्या सहायक है: विनम्र रहें, गपशप से बचें और छोटी बातें जल्दी सुलझा लें।
- **साहस और प्रयास** — क्या हो सकता है: बिखरे प्रयास या हिचकिचाहट। क्या सहायक है: छोटे दैनिक लक्ष्य रखें और अगला काम शुरू करने से पहले एक काम पूरा करें।
- **लेखन, मीडिया और कौशल** — क्या हो सकता है: संवाद में गड़बड़ी या कागज़ खो जाना। क्या सहायक है: संदेश और कागज़ात भेजने से पहले दोबारा जाँचें और प्रतियाँ रखें।

भाव 6 के विषय:

- **क़ानूनी विवाद** — क्या हो सकता है: विवाद का लंबा खिंचना। क्या सहायक है: समझौते को प्राथमिकता दें, सारे रिकॉर्ड रखें और योग्य वकील से सलाह लें।
- **कर्मचारी और सहायक** — क्या हो सकता है: कर्मचारियों या सहायकों से परेशानी। क्या सहायक है: स्पष्ट निर्देश दें और व्यवहार निष्पक्ष तथा लिखित में रखें।
- **प्रतिद्वंद्वी और प्रतिस्पर्धा** — क्या हो सकता है: कड़ा विरोध या दफ़्तर की राजनीति। क्या सहायक है: शांत रहें, अपने काम का रिकॉर्ड रखें और गपशप से बचें।

भाव 11 के विषय:

- **समूह और संगठन** — क्या हो सकता है: किसी समूह के झगड़ों में खिंच जाना। क्या सहायक है: समूहों के झगड़ों से दूर रहें और अपना समय वहीं दें जहाँ उसकी कद्र हो।
- **आय और लाभ** — क्या हो सकता है: अपेक्षा से कम आय या भुगतान में देरी। क्या सहायक है: अपेक्षित आय पर पहले से खर्च न करें और बकाया का साफ़ रिकॉर्ड रखें।
- **मित्र और संपर्क** — क्या हो सकता है: ऐसे मित्र जो निराश करें या आपका समय और पैसा खींचें। क्या सहायक है: संगति सोच-समझकर चुनें और मित्रों को पैसे उधार न दें, न ही उनकी गारंटी लें।

मंगल – मंगल: 29/08/2103 से 26/01/2104 तक

महादशा स्वामी की अपनी ही यह अंतर्दशा उसके फलों को और गहरा करती है। मंगल फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 6

SAMPLE

और 11 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 3 में बैठे हैं। स्वर: परीक्षा वाला। सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (परीक्षा वाला), धन और आर्थिक स्थिति (परीक्षा वाला)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 7 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार) में और शनि भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 7 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 6 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। शनि भाव 6 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए वे विषय वज़न, ज़िम्मेदारी और टिकाऊ फल के साथ आते हैं।

भाव 3 के विषय:

- **पड़ोसी और आस-पास के लोग** — क्या हो सकता है: पड़ोसियों या सहकर्मियों से छोटे झगड़े। क्या सहायक है: विनम्र रहें, गपशप से बचें और छोटी बातें जल्दी सुलझा लें।
- **साहस और प्रयास** — क्या हो सकता है: बिखरे प्रयास या हिचकिचाहट। क्या सहायक है: छोटे दैनिक लक्ष्य रखें और अगला काम शुरू करने से पहले एक काम पूरा करें।

भाव 6 के विषय:

- **कर्ज़ और ऋण** — क्या हो सकता है: कर्ज़ या किस्तों का दबाव। क्या सहायक है: भुगतान की योजना पहले से बनाएँ, नया कर्ज़ न लें और देरी की आशंका हो तो ऋणदाता से जल्दी बात करें।
- **स्वास्थ्य और दैनिक दिनचर्या** — क्या हो सकता है: पाचन, तनाव से जुड़ी या बार-बार होने वाली छोटी शिकायतें। क्या सहायक है: हल्का खाएँ, व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। डॉक्टर को जल्दी दिखाएँ; केवल उपायों पर निर्भर न रहें।

मंगल – राहु: 26/01/2104 से 12/02/2105 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। राहु फिर अपनी राशि और राशि स्वामी के फल देते हैं, और आपकी कुंडली के भाव 5 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 9 (भाग्य, पिता) में और शनि भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 9 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 6 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 5 के विषय:

- **संतान** — क्या हो सकता है: संतान के बारे में खुशी, प्रगति और अच्छी खबर; कठिन पक्ष में, संतान की पढ़ाई, स्वास्थ्य या व्यवहार की चिंता। क्या सहायक है: उन्हें धैर्य से समय दें, दबाव के बिना मार्गदर्शन करें और कुछ चिंताजनक लगे तो डॉक्टर या शिक्षक से जल्दी बात करें।
- **शिक्षा और पढ़ाई** — क्या हो सकता है: अच्छी एकाग्रता और पढ़ाई व परीक्षा में सफलता; कठिन पक्ष में, ध्यान भटकना या मेहनत से कम परिणाम। क्या सहायक है: तय समय-सारणी अपनाएँ, छोटे केंद्रित सत्रों में पढ़ें और फ़ोन दूर रखें।

मंगल – गुरु: 12/02/2105 से 19/01/2106 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। गुरु फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 7 और 10 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 6 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (मिश्रित), धन और आर्थिक स्थिति (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) में और शनि भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 10 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 6 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। दोनों धीमे ग्रह उन भावों से मिलते हैं जिन्हें यह उप-दशा सक्रिय करती है, इसलिए यह इस चरण के अधिक घटनापूर्ण समयों में से एक है।

भाव 6 के विषय:

- **सेवा और दैनिक कार्य** — क्या हो सकता है: मेहनत और सेवा की सराहना; कठिन पक्ष में, काम का अधिक बोझ और थकान। क्या सहायक है: काम की प्राथमिकता तय करें, जहाँ हो सके सौंपें और ठीक से विश्राम लें।

SAMPLE

- **क़ानूनी विवाद** — क्या हो सकता है: विवाद में अनुकूल परिणाम; कठिन पक्ष में, विवाद का लंबा खिंचना। क्या सहायक है: समझौते को प्राथमिकता दें, सारे रिकॉर्ड रखें और योग्य वकील से सलाह लें।

भाव 7 के विषय:

- **विवाह की संभावनाएँ** — क्या हो सकता है: अच्छे प्रस्ताव और विवाह की बातचीत में प्रगति; कठिन पक्ष में, विवाह के निर्णय में देरी या असमंजस। क्या सहायक है: व्यक्ति और परिवार को जानने के लिए समय लें, शांति से अनुकूलता जाँचें और जल्दबाज़ी न करें।
- **व्यापारिक साझेदारी** — क्या हो सकता है: लाभदायक गठबंधन और भरोसेमंद साझेदार; कठिन पक्ष में, साझेदार से मतभेद या अस्पष्ट शर्तें। क्या सहायक है: हर शर्त लिखित में रखें और हस्ताक्षर से पहले क़ानूनी सलाह लें।

मंगल – शनि: 19/01/2106 से 28/02/2107 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। शनि फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 8 और 9 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 10 में बैठे हैं। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (अधिकतर अनुकूल), आध्यात्मिक जीवन (अधिकतर अनुकूल)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी 6/8 संबंध में हैं, इसलिए महादशा और अंतर्दशा के विषय एक-दूसरे के विपरीत खिंच सकते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 11 (आय, लाभ) में और शनि भाव 7 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 11 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 7 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 10 के विषय:

- **व्यापार और पेशा** — क्या हो सकता है: व्यापार का विस्तार और बाज़ार में बेहतर नाम। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: खर्च पर नियंत्रण रखें, हिसाब साफ़ रखें और विस्तार से पहले विशेषज्ञ की सलाह लें।
- **अधिकारी और अधिकारधारी लोग** — क्या हो सकता है: अधिकारियों और अधिकारधारी लोगों का सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: स्पष्ट संवाद करें, समय पर काम पूरा करें और सार्वजनिक बहस से बचें।

भाव 8 के विषय:

- **विरासत और साझा धन** — क्या हो सकता है: विरासत, बीमा या ससुराल पक्ष से लाभ। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: वसीयत और कागज़ात स्पष्ट रखें और किसी भी समझौते से पहले क़ानूनी सलाह लें।
- **शोध और गूढ़ विषय** — क्या हो सकता है: गहरा शोध, अंतर्दृष्टि और गूढ़ विषयों के अध्ययन में सफलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: नियमित दिनचर्या रखें और अति या जोखिम भरी साधनाओं से बचें।

मंगल – बुध: 28/02/2107 से 25/02/2108 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। बुध फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 1 और 4 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 12 में बैठे हैं। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (अधिकतर अनुकूल), घर, संपत्ति और वाहन (अधिकतर अनुकूल)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 12 (खर्च, विदेश) में और शनि भाव 7 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 12 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 7 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। गुरु भाव 12 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए इसके फलों को सहारा मिलता है और उनका लाभ उठाना आसान होता है।

भाव 12 के विषय:

- **आध्यात्मिक उन्नति** — क्या हो सकता है: आंतरिक शांति, ध्यान और आध्यात्मिक प्रगति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ ध्यान करें और परिवार तथा मित्रों के संपर्क में रहें।
- **अस्पताल और छिपी चिंताएँ** — क्या हो सकता है: पुरानी चिंताओं से स्वास्थ्य-लाभ और मुक्ति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: जाँच जल्दी कराएँ और डॉक्टर से सलाह लें; छोटे लक्षणों को नज़रअंदाज़ न करें।

SAMPLE

भाव 1 के विषय:

- **छवि और प्रतिष्ठा** — क्या हो सकता है: लोगों के बीच पहचान और अच्छी छवि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: वादे निभाएँ, विनम्रता से बोलें और दिखावे से बचें।
- **स्वास्थ्य और ऊर्जा** — क्या हो सकता है: बेहतर ऊर्जा, सहनशक्ति और जल्दी स्वस्थ होना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सोने और खाने का समय तय रखें, रोज़ व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। कोई भी लक्षण हो तो इंतज़ार करने के बजाय जल्दी डॉक्टर को दिखाएँ।

मंगल – केतु: 25/02/2108 से 23/07/2108 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। केतु फिर अपनी राशि और राशि स्वामी के फल देते हैं, और आपकी कुंडली के भाव 11 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: धन और आर्थिक स्थिति (मिश्रित), घर, संपत्ति और वाहन (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 12 (खर्च, विदेश) में और शनि भाव 8 (अचानक परिवर्तन, शोध) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 12 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 8 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 11 के विषय:

- **बड़े भाई-बहन** — क्या हो सकता है: बड़े भाई-बहनों से सहयोग और अच्छी सलाह; कठिन पक्ष में, बड़े भाई-बहनों से मतभेद। क्या सहायक है: उनका सम्मान करें और पैसों के मामले रिश्ते से अलग रखें।
- **इच्छाओं की पूर्ति** — क्या हो सकता है: लंबे समय से अटकी इच्छाएँ पूरी होने लगती हैं; कठिन पक्ष में, ऐसी इच्छाएँ जिनके लिए और धैर्य चाहिए। क्या सहायक है: यथार्थवादी लक्ष्य रखें और चरणबद्ध तरीके से आगे बढ़ें।

मंगल – शुक्र: 23/07/2108 से 22/09/2109 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। शुक्र फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 5 और 12 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 12 में बैठे हैं। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: यात्रा और विदेश से संबंध (अधिकतर अनुकूल), धन और आर्थिक स्थिति (अधिकतर अनुकूल)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत) में और शनि भाव 8 (अचानक परिवर्तन, शोध) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 1 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 8 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 12 के विषय:

- **लापरवाही से हानि** — क्या हो सकता है: किसी पुराने बोझ का अंत। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कीमती वस्तुएँ सुरक्षित रखें, बिल और समझौते जाँचें और आँख मूँदकर भरोसा न करें।
- **खर्च** — क्या हो सकता है: सुख-सुविधा, परिवार या अच्छे कार्यों पर होने वाला खर्च। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: बजट रखें, आवेग में खरीदारी से बचें और आपातकालीन कोष बनाए रखें।

भाव 5 के विषय:

- **रचनात्मकता और प्रतिभा** — क्या हो सकता है: बहते विचार और ध्यान में आने वाली प्रतिभा। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ थोड़ा तय समय अभ्यास करें और छोटे-छोटे काम पूरे करें।
- **प्रेम** — क्या हो सकता है: प्रेम में गर्मजोशी और खुशी। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: ईमानदार रहें, धीरे चलें और जल्दबाज़ी में प्रतिबद्धता न करें।

मंगल – सूर्य: 22/09/2109 से 28/01/2110 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। सूर्य फिर अपने भाव के विषय लाते हैं:

SAMPLE

ये भाव 3 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 1 में बैठे हैं। स्वर: परीक्षा वाला। सक्रिय करती है: स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (परीक्षा वाला), करियर और व्यवसाय (परीक्षा वाला)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 3 (साहस, भाई-बहन) में और शनि भाव 8 (अचानक परिवर्तन, शोध) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 3 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 8 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। गुरु भाव 3 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए इसके फलों को सहारा मिलता है और उनका लाभ उठाना आसान होता है।

भाव 1 के विषय:

- **आत्मविश्वास और व्यक्तित्व** — क्या हो सकता है: अधीरता, अहंकार का टकराव या स्वयं पर संदेह। क्या सहायक है: प्रतिक्रिया देने से पहले रुकें, पहले सुनें और बड़े निर्णय एक रात सोचकर ही लें।
- **नई शुरुआत** — क्या हो सकता है: जल्दबाज़ी में या बिना योजना की शुरुआत। क्या सहायक है: पहले योजना बनाएँ, सलाह लें और छोटे स्तर से शुरू करें ताकि बड़ा करने से पहले परख सकें।

भाव 3 के विषय:

- **छोटे भाई-बहन** — क्या हो सकता है: ग़लतफ़हमी या किसी छोटे भाई-बहन की चिंता। क्या सहायक है: संपर्क में रहें, हिसाब रखे बिना मदद करें और संपत्ति या पैसों के मामले आपस में स्पष्ट रखें।
- **छोटी यात्राएँ** — क्या हो सकता है: यात्रा में देरी या छोटी-मोटी असुविधाएँ। क्या सहायक है: पहले से योजना बनाएँ, कागज़ात तैयार रखें और सावधानी से वाहन चलाएँ।

मंगल – चंद्र: 28/01/2110 से 29/08/2110 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। चंद्र फिर अपने भाव के विषय लाते हैं: ये भाव 2 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 9 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: धन और आर्थिक स्थिति (मिश्रित), करियर और व्यवसाय (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) में और शनि भाव 8 (अचानक परिवर्तन, शोध) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 2 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 8 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। गुरु भाव 2 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए इसके फलों को सहारा मिलता है और उनका लाभ उठाना आसान होता है।

भाव 9 के विषय:

- **उच्च शिक्षा** — क्या हो सकता है: उच्च शिक्षा, शोध या पाठ्यक्रमों में प्रवेश या सफलता; कठिन पक्ष में, उच्च शिक्षा की योजनाओं में बाधा या बदलाव। क्या सहायक है: जल्दी आवेदन करें और वैकल्पिक विकल्प तैयार रखें।
- **दान और पुण्य कर्म** — क्या हो सकता है: सार्थक दान का अवसर जो आशीर्वाद दिलाए; कठिन पक्ष में, ऐसा दान जो ग़लत जगह जाए या जिसकी कद्र न हो। क्या सहायक है: चुपचाप सच्चे कार्यों के लिए दें और कभी अपनी सामर्थ्य से अधिक न दें।

भाव 2 के विषय:

- **पारिवारिक जीवन** — क्या हो सकता है: घर में तालमेल, एकजुटता और सहयोग; कठिन पक्ष में, छोटी बातों पर निकट संबंधियों से मतभेद। क्या सहायक है: संभव हो तो साथ भोजन करें, ताने देने से बचें और रिश्तेदारों के बीच पैसों के मामले लिखित में तय करें।
- **वाणी और संवाद** — क्या हो सकता है: ऐसी बातें जिनका वज़न हो और लोग आपको सुनें; कठिन पक्ष में, कठोर शब्द या ग़लतफ़हमी। क्या सहायक है: बोलने से पहले सोचें, बहस से बचें और महत्वपूर्ण बातें लिखित में रखें।

आधार: बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — दशा और अंतर्दशा के फल; मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — दशाओं के फल; कालिदास का उत्तर कालामृत — दशा फल।

SAMPLE

उपाय और रत्न

सरल पारंपरिक उपाय

ये लाल किताब और लोक परंपराओं में हर ग्रह से जुड़े, व्यापक रूप से किए जाने वाले सरल उपाय हैं। ये उन ग्रहों के लिए दिए गए हैं जिन्हें आपकी कुंडली में सहारे की ज़रूरत है।

सूर्य (सोया हुआ, आपके लग्न के लिए अनुकूल नहीं)

- उगते सूर्य को जल अर्पित करें।
- पिता और बड़ों का आदर करें।
- जहाँ तक हो सके, दूसरों से मुफ़्त उपहार लेने से बचें।
- ताँबे का एक छोटा टुकड़ा अपने पास रखें या ताँबे का सिक्का बहते पानी में प्रवाहित करें।

चंद्र

- माता का आदर और सेवा करें; महत्वपूर्ण काम से पहले उनका आशीर्वाद लें।
- रात को बिस्तर के पास चाँदी की कोई वस्तु या पानी का बर्तन रखें और सुबह वह पानी किसी पौधे में डाल दें।
- सोमवार को ज़रूरतमंदों को दूध या चावल दें।
- रात में पानी के पास बेवजह यात्रा से बचें।

मंगल (आपके लग्न के लिए अनुकूल नहीं)

- मंगलवार को हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- हनुमान मंदिर में मिठाई (जैसे गुड़) अर्पित करें।
- भाइयों से अच्छे संबंध रखें।
- क्रोध और लापरवाही से वाहन चलाने से बचें।

बुध (लाल किताब के भाव से कमज़ोर, भाव 12 में)

- गायों को हरा चारा खिलाएँ।
- बहन, बेटी और बुआ-मौसी का आदर करें।
- दाँत और नाक साफ़ रखें।
- चुगली से बचें और वादे निभाएँ।

गुरु (भाव 6 में, आपके लग्न के लिए अनुकूल नहीं)

- माथे पर केसर या हल्दी का छोटा तिलक लगाएँ।
- गुरुजनों, बड़ों और धार्मिक व्यक्तियों का आदर करें।
- पुस्तकें दान करें या शिक्षा में सहायता करें।
- अपना आचरण ईमानदार रखें।

शुक्र (भाव 12 में)

- जीवनसाथी और सामान्य रूप से स्त्रियों का आदर करें।
- शुक्रवार को चावल, दही या कपड़े जैसी सफ़ेद वस्तुएँ दान करें।
- स्वयं को और घर को साफ़ और सुगंधित रखें।
- अति-भोग से बचें।

SAMPLE

शनि

- बुज़ुर्गों और मेहनतकश लोगों की सेवा करें; गरीबों की सहायता करें।
- शनिवार को दान के रूप में सरसों का तेल चढ़ाएँ।
- शनिवार को शराब और मांसाहार से बचें।
- व्यवहार में ईमानदार रहें; किसी से धोखा न करें।

राहु

- ससुराल पक्ष से अच्छे संबंध रखें।
- ज़रूरतमंदों को जौ या सरसों दान करें।
- नीले या गहरे रंग के कपड़े बहुत अधिक न पहनें।
- पलंग के नीचे की जगह साफ़ और खाली रखें।

केतु

- कुत्तों को भोजन दें या उनकी देखभाल करें।
- ज़रूरतमंद को कंबल दान करें।
- बच्चों और मामा का आदर करें।
- गणेश मंदिर में पूजा के बाद कलाई पर धागा बाँधें।

रत्न मार्गदर्शिका

परंपरा से रत्न कुंडली के किसी सहायक ग्रह को बल देने के लिए पहने जाते हैं। रत्न केवल उसी ग्रह का पहनना चाहिए जो आपके लग्न के लिए शुभ हो; परंपरा के अनुसार अशुभ ग्रह का रत्न पहनने से उसकी कठिनाइयाँ बढ़ सकती हैं। गरुड़ पुराण में रत्नों की परीक्षा (रत्न-परीक्षा) का एक प्रसिद्ध प्रसंग है, जिसमें प्राकृतिक और दोषरहित रत्नों पर ज़ोर दिया गया है। हमेशा प्रमाणित प्राकृतिक रत्न ही खरीदें, संभव हो तो कुछ दिन आज़माकर देखें, और पहनने से पहले किसी अनुभवी ज्योतिषी से सलाह लें।

चंद्र के लिए मोती (अंक 58)

कैसे पहनें	चाँदी की अंगूठी, कनिष्ठा उँगली, सोमवार सुबह
मंत्र	ॐ सोमाय नमः, 108 बार
सामान्य वज़न	4 से 7 कैरेट
क्यों	सम राशि; भाव 9 में (केंद्र/त्रिकोण)

बुध के लिए पन्ना (अंक 68)

कैसे पहनें	सोने या काँसे की अंगूठी, कनिष्ठा उँगली, बुधवार सुबह
मंत्र	ॐ बुधाय नमः, 108 बार
सामान्य वज़न	3 से 6 कैरेट
क्यों	इस लग्न के लिए कारक शुभ ग्रह; मित्र राशि; भाव 12 में (दुःस्थान)

शुक्र के लिए हीरा या सफ़ेद पुखराज (अंक 75)

कैसे पहनें	चाँदी या प्लैटिनम की अंगूठी, मध्यमा या अनामिका उँगली, शुक्रवार सुबह
मंत्र	ॐ शुक्राय नमः, 108 बार
सामान्य वज़न	0.5 से 1 कैरेट (हीरा)
क्यों	इस लग्न के लिए कारक शुभ ग्रह; स्वराशि; भाव 12 में (दुःस्थान)

शनि के लिए नीलम (अंक 78)

कैसे पहनें	चाँदी या पंचधातु की अंगूठी, मध्यमा उँगली, शनिवार शाम; पहले परीक्षण के रूप में पहनें

SAMPLE

मंत्र	ॐ शनये नमः, 108 बार
सामान्य वज़न	3 से 5 कैरेट
क्यों	इस लग्न के लिए कारक शुभ ग्रह; सम राशि; भाव 10 में (केंद्र/त्रिकोण)

राहु के लिए गोमेद (अंक 66)

कैसे पहनें	चाँदी की अंगूठी, मध्यमा उँगली, शनिवार शाम
मंत्र	ॐ राहवे नमः, 108 बार
सामान्य वज़न	5 से 8 कैरेट
क्यों	मित्र राशि; भाव 5 में (केंद्र/त्रिकोण)

केतु के लिए लहसुनिया (कैट्स आई) (अंक 60)

कैसे पहनें	चाँदी की अंगूठी, मध्यमा या कनिष्ठा उँगली, मंगलवार या गुरुवार
मंत्र	ॐ केतवे नमः, 108 बार
सामान्य वज़न	3 से 5 कैरेट
क्यों	मित्र राशि; भाव 11 में

पहनने से पहले अंगूठी को कच्चे दूध और गंगाजल (या साफ़ पानी) से धोएँ, धूप और फूल अर्पित करें, ग्रह के मंत्र का 108 बार जाप करें, और बताए गए समय पर धारण करें। यदि लगातार असहजता महसूस हो, तो उसे उतार दें।

आधार: लाल किताब परंपरा (केवल पद्धति; उपाय सामान्य पारंपरिक उपाय हैं) — उपाय; गरुड़ पुराण (रत्न-परीक्षा प्रसंग) — रत्नों की परीक्षा।

SAMPLE

कृपया ध्यान से पढ़ें। ज्योतिष प्रवृत्तियाँ और अनुकूल समय दिखाता है, निश्चितताएँ नहीं — विवाह आपके अपने निर्णयों, परिवार और परिस्थितियों पर निर्भर है। केवल इस रिपोर्ट के आधार पर किसी व्यक्ति के बारे में राय न बनाएँ, कोई रिश्ता न ठुकराएँ और विवाह में देर न करें, और इसका उपयोग कभी किसी पर दबाव डालने के लिए न करें। गणना पूरी सावधानी से की गई है, फिर भी यह रिपोर्ट किसी भी प्रकार की स्पष्ट या निहित गारंटी या वारंटी के बिना दी जाती है। किसी भी महत्वपूर्ण निर्णय से पहले अपने ज्योतिषी से सलाह अवश्य लें।

SAMPLE

स्रोत और अस्वीकरण

इस रिपोर्ट के फलादेश नीचे दिए शास्त्रीय ग्रंथों के सिद्धांतों के आधार पर हमारे अपने शब्दों में लिखे गए हैं। संदर्भ ग्रंथ और विषय के नाम से दिए गए हैं।

- बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है)
- वराहमिहिर का बृहज्जातक (छठी शताब्दी)
- कल्याणवर्मा की सारावली (लगभग 10वीं शताब्दी)
- मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी)
- वैद्यनाथ दीक्षित का जातक पारिजात (लगभग 15वीं शताब्दी)
- कालिदास का उत्तर कालामृत
- नारायण भट्ट का चमत्कार चिंतामणि
- पृथुयशस का होरासार
- रामदैवज्ञ का मुहूर्त चिंतामणि
- गरुड़ पुराण (रत्न-परीक्षा प्रसंग)
- नीलकंठ की ताजिक नीलकंठी (वर्षफल)
- लाल किताब परंपरा (केवल पद्धति; उपाय सामान्य पारंपरिक उपाय हैं)

SAMPLE